शारदीय नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

नवम सिद्धिदात्री देवी भगवतो का नौवां स्वरूप सिद्धिदात्री का है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राहि, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियां हैं, जिन्हें पाकर साधक सुख समृद्धि का प्रतीक बन जाता है। ये महालक्ष्मीजी की ही स्वरूप हैं। इनकी आराधना के साथ ही नवरात्र व्रत का पारायण होता है। देवी पूजन के साथ कन्या भोज व यज्ञ का विशेष फल मिलता है।

वर्ष : 26 | अंक : 290 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, शुक्रवार, 11 अक्टूबर, 2024 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रुपया | पेज: 8

जेपीएनआईसी को सील करने पर भड़के सपाई

टीन शेड लगाकर सरकार कुछ छुपाना चाह रही : अखिलेश यादव

लखनऊ (एजेंसी)। जयप्रकाश नारायण की जयंती पर आज समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव की निर्धारित यात्रा से पहले जय प्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (जेपीएनआईसी) को सील कर दिया गया है। बैरिकेडिंग की गई है और पुलिस बल तैनात किया गया है। अखिलेश के घर के बाहर पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। इससे सपा नेता आक्रोशित हैं।

बता दें कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव आज जयप्रकाश नारायण की जयंती पर गोमती नगर स्थित जेपीएनआईसी का दौरा करने वाले थे। अखिलेश यादव ने कहा कि जयप्रकाश नारायण की जयंती के दिन सपा कार्यकर्ता उनके म्यूजियम में जयंती मनाते हैं। लेकिन हमें दो बार से माल्यार्पण करने से रोका जा रहा है।

विरोध प्रदर्शन के बीच पुलिस अधिकारी अखिलेश यादव से बात करने के लिए उनके निजी आवास के अंदर गए। (शेष पृष्ठ-4 पर)

जेपीएनआईसी को ध्वस्त कर बेचना चाहती है सरकार : अजय राय

यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि इस सरकार की मंशा ठीक नहीं है। पिछले साल भी इसी तरह की चीजें की गई थीं। उन्होंने वाराणसी में सर्व सेवा संघ को ध्वस्त कर दिया, इसी तरह, मुझे लगता है कि वे उसे (जेपीएनआईसी) भी ध्वस्त करने और एक बड़े व्यवसायी को बेचने की कोशिश कर रहे हैं।

सीपी ने किया दो पिंक बूथ का शुभारंभ

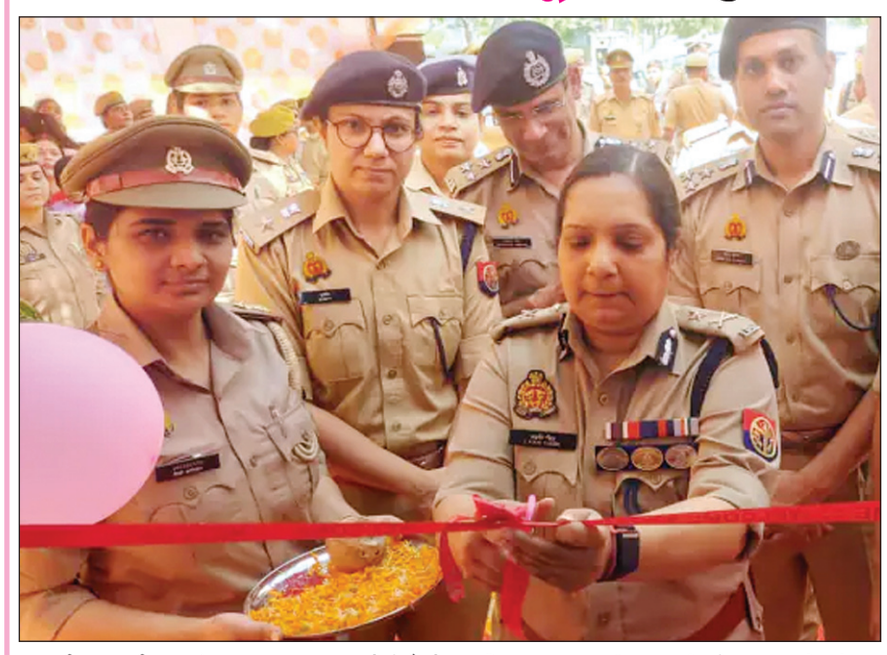

नोएडा (चेतना मंच)। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाए गए मिशन शक्ति-5 के तहत आज पुलिस कमिश्नर श्रीमती लक्ष्मी सिंह ने फेस-2 थाना क्षेत्र में दो पिंक बूथ का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि बूथ बनाने का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं को उत्पीड़न और अपराध से बचाना है। उन्होंने कहा कि किसी भी महिला के साथ अगर कोई अप्रिय घटना होती है तो वह पिक बुथ पर आकर अपनी समस्या वहां तैनात महिला पुलिस अधिकारियों को बता सकती हैं।

उन्होंने कहा कि महिलाएं अपने हर समस्या का निदान यहां से करवा सकती हैं। उन्होंने कहा की पिंक बूथ के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सुविधाओं को महिलाओं और बच्चियों को बताया जाएगा कि बच्ची के जन्म से लेकर शिक्षा-दीक्षा व अच्छा भोजन प्राप्त करना, स्कूल कॉलेज में पढना और उसके पश्चात जीवन उपार्जन के लिए क्या-क्या साधन उपलब्ध हो सकता है, यह सारी जानकारी पिक बूथ के माध्यम से दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए जो पुलिसकर्मी वहां पर तैनात हैं उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है। (शेष पृष्ठ-4 पर)

बाइक की टक्कर में राजमिस्त्री की मौत

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-142 क्षेत्र में बाइक की टक्कर लगने से एक राजमिस्त्री की मौत हो गई। परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने बाइक सवार के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

जनपद अमरोहा निवासी आकाश कुमार ने बताया कि उसका जीजा करण सिंह छपरौली गांव में किराए पर रह कर राजमिस्त्री का काम करता था। 4 अक्टूबर को वह अपने साथी मनोज के साथ पैदल अपने कमरे की तरफ आ रहा था। पीछे से तेज गति में आ रहा बाइक

सवार संतुलन खो बैठा और उसने उसके जीजा करण सिंह व मनोज को टक्कर मार दी इस हादसे में दोनों घायल हो गए। पुलिस की मदद से दोनों को गंभीर हालत में फेलिक्स अस्पताल में भर्ती कराया गया। उपचार के दौरान करण सिंह की मौत हो गई। जबकि मनोज की हालत गंभीर बनी हुई है।

जालसाज ने एटीएम बदलकर खाते से नकदी निकाली

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-63 क्षेत्र में स्थित एटीएम बूथ से पैसे निकालने गए एक व्यक्ति का जालसाज ने धोखाधड़ी से एटीएम बदल दिया। बदले गए एटीएम के जरिए जालसाज ने 15800 रूपये निकाल लिए। पीड़ित ने थाना सेक्टर-63 में मुकदमा दर्ज कराया है। चोटपुर कॉलोनी निवासी निरंजन ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 7 अक्टूबर को वह अपनी कंपनी से पास के ही एक्सिस बैंक के एटीएम से पैसे निकालने के लिए गया था। एटीएम से पैसे ना निकलने पर उसके पीछे खड़े व्यक्ति ने उसकी मदद करने के बहाने चालाकी से उसका (शेष पृष्ठ-4 पर)

प्रिपॉन्डरेंस ऑफ़ शक्ति का हुआ आयोजन

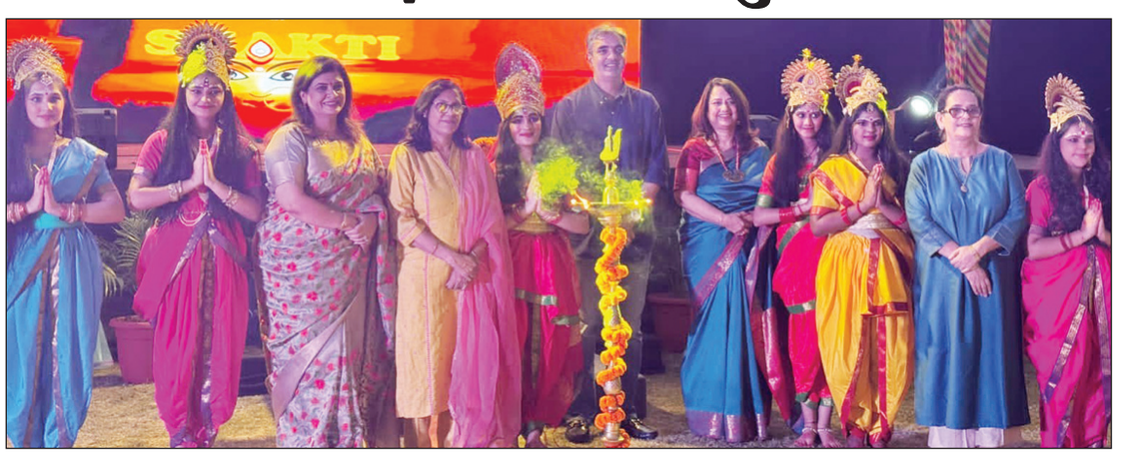

नोएडा (चेतना मंच)। मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल द्वारा विद्यालय के प्रांगण में नवरात्रि के शुभ अवसर पर नारी के अंदर समाहित 'महिषासुरमर्दिनी' को जाग्रत करता कार्यक्रम 'प्रिपॉन्डरेंस ऑफ़ शक्ति' का हर्षोल्लास तथा धूमधाम के साथ आयोजन किया गया। माँ दुर्गा के नौ रूपों के माध्यम से आज की नारी को अपनी शक्तियों को पहचानने का संदेश दिया गया। (शेष पृष्ठ-4 पर)

शातिर चोर दबोचा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना ईकोटेक-3 पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। इसके पास से नगदी, बिजली तार के बंडल व चाकू बरामद हुआ हैं। थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम गश्त पर थी। इस दौरान मुखबिर ने सूचना दी कि कुलेसरा में कबाड़ी की दुकान चलाने वाला मोहसिन चोरी की घटनाओं का अंजाम देता है। मोहसिन चोरी के मामले में भी वांछित चल रहा है। थाना प्रभारी ने बताया कि मुखबिर की सूचना के आधार पर बताए गए स्थान पर छापा मार कर मोहसिन को दबोच लिया गया। तलाशी में इसके पास से चाकू व 49500 रूपये बरामद हुए। पूछताछ में मोहसिन ने बताया कि उसने 28 अगस्त की रात्रि को अपने साथी दिलशाद उर्फ गोलू, आमिर अली, विकास उर्फ किंग कोंग, रोहित उर्फ बॉबी, (शेष पृष्ठ-4 पर)

किशोरी लापता

नोएडा (चेतना मंच)। हलद्वानी गांव से एक किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। किशोरी के परिजनों ने दो युवकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। थाना ईकोटेकिन क्षेत्र के हल्द्वानी गांव में किराए पर रहने वाली किशोरी घर से लापता हो गई। उसने जब अपनी बेटी की तलाश की तो पता चला कि पड़ोस में रहने वाला लखीमपुर खीरी निवासी कन्हैयालाल उनकी बेटी को बहला फुसलाकर अपने साथ ले गया है। उन्होंने जब इस संबंध में कन्हैया के भाई अनुज में रूम पार्टनर से बात की तो उन्होंने कोई भी जानकारी होने से इनकार कर दिया। (शेष पृष्ठ-4 पर)

एक माह में 268 किसानों को भूखंड देगा नोएडा प्राधिकरण

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा प्राधिकरण ने एक माह के अंदर 268 किसानों को भूखंड देने का निर्णय लिया है। अधिकारियों ने बताया कि आगामी एक माह में इन किसानों को भूखंड देने के लिए उनसे अर्जित भूमि के सापेक्ष पौने ग्यारह हेक्टेयर जमीन चिन्हित की गई है। यह भूखंड सेक्टर-146 में दिये जाएंगे। बता दें कि हाल ही में 8 गांवों के 41 किसानों को अर्जित भूमि के सापेक्ष जमीन दी जा चुकी है। बता दें कि आबादी विनयमितीकरण के तहत शाहपुर गोवर्धन गांव के 4 किसानों की जमीन का निपटारा किया गया। ओएसडी ने बताया कि किसानों से आपसी सहमति के आधार पर जमीन ली जाएगी। (शेष पृष्ठ-4 पर)

शीशपंगमा चोटी पर फतह हासिल की अर्जुन वाजपेयी ने

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-51 के रहने वाले पर्वतारोही अर्जुन वाजपेयी ने एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए 8,027 मीटर ऊंची शीशपंगमा चोटी को बुधवार को फतह कर लिया है। यह तिब्बत में स्थित 14वीं सबसे ऊंची चोटी है। (शेष पृष्ठ-4 पर)

गाय के साथ दुष्कर्म करते पकड़ा

नोएडा (चेतना मंच)। कलयुग के इस दौर में मानसिक रूप से विकृत लोग जानवरों के साथ भी घिनौनी हरकत करने से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला थाना फेस-2 में प्रकाश में आया है। यहां गौशाला में एक गाय के साथ दुष्कर्म करते हुए एक युवक को लोगों ने दबोच लिया। पकड़े गए आरोपी को लोगों ने पुलिस के हवाले कर दिया है। सेक्टर-110 में गौशाला चलाने वाली राजबाला ने बताया कि बीती रात्रि किसी व्यक्ति ने उसका दरवाजा खटखटाया उसने गेट खोला तो उनके घर के बाहर कृष्ण भोजनालय के मालिक मुनेश चौहान खड़े हुए थे। उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति उनकी गौ माता के साथ दुष्कर्म कर (शेष पृष्ठ-4 पर)

विभिन्न स्थानों पर झपटमारों ने दो लोगों से मोबाइल लूटे

नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थान से बाइक सवार बदमाशों ने दो लोगों से मोबाइल फोन लूट लिया और फरार हो गए। पीड़ितों की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। इलेक्ट्रॉनिक सिटी निवासी दिलीप कुमार गुप्ता ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह 4 अक्टूबर की सुबह घर से मॉर्निंग वॉक के लिए गया था। पार्क में मॉर्निंग वॉक करने के बाद वह अपने घर वापस लौट रहा था पार्क से निकलते ही उसके पीछे दो बाइक सवार लग गए। सुनसान जगह पर उन्होंने उसके हाथ से मोबाइल फोन छीन लिया। उसने शोर मचाकर (शेष पृष्ठ-4 पर)

RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : Highly Qualified And Trained Faculty
well Quipped Labs CCTV Controlled Environment Activity Based Learning
Well Equipped Library GPS Enable Buses

फैक्ट्री मालिक समेत दो लोगों पर मारपीट करने का मुकदमा दर्ज

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना सूरजपुर में एक महिला उद्यमी ने फैक्ट्री मालिक सहित दो लोगों के खिलाफ मारपीट, छेड़छाड़, गाली गलौज मैं जान से मारने की धमकी देने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़िता का आरोप है कि दोनों के बीच वैध किरायानामा होने के बावजूद भी फैक्ट्री मालिक अवैध रूप से वसूली का प्रयास कर रहा है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर-10 निवासी मुनमुन सिंह ने बताया कि उसने जनवरी माह में साइड बी स्थित एक फैक्ट्री किराए पर ली थी। किराए पर लेते समय उसने (शेष पृष्ठ-4 पर)

फायरिंग करने के वांछित दो आरोपी गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। मामूली विवाद में बीते दिनों पाली गांव में एक व्यक्ति पर फायरिंग कर दहशत फैलाने वाले दो बदमाशों को थाना सूरजपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इनके पास से देसी पिस्तौल व तमंचा बरामद हुआ है। झगड़े के दौरान चांटा मारने से गुस्साए युवकों ने फायरिंग की थी। थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम भट्टा गोल चक्कर पर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान मुखबिर ने सूचना दी कि बीते दिनों पाली गांव में फायरिंग करने वाले दोनों आरोपी समझौते के लिए मकोड़ा गोल चक्कर से होते हुए पाली गांव जाने वाले हैं। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने मकोड़ा गोल चक्कर पर चेकिंग शुरू कर दी। मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस ने बाइक पर (शेष पृष्ठ-4 पर)

जेपी ने कुशल नेतृत्व से उखाड़ फेंकी थी इंदिरा गांधी की सत्ता

लोक नायक जयप्रकाश नारायण की जयंती पर दी भावपूर्ण श्रद्धांजलि

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-11 स्थित भारतीय सोशलिस्ट मंच के प्रदेश कार्यालय पर समाजवादी पुरोधा लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर लोकनायक के संघर्ष पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर मंच के प्रदेश प्रभारी देवेंद्र सिंह अवाना ने कहा कि वह लोकनायक जयप्रकाश जी ही थे जिन्होंने डॉ. राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर भूमिगत रहते हुए भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया था। उन्होंने कहा कि जब महात्मा गांधी ने करो या मरो का नारा दिया। अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन छेड़ा तो गांधी जी, पंडित नेहरू, सरदार पटेल समेत बड़े

कांग्रेसियों को गिरफ्तार कर लिया गया। तब जयप्रकाश डा. लोहिया, ऊषा मेहता, अरुणा आसफ अली जैसे समाजवादियों ने आंदोलन की अगुआई की थी। लोकनायक जयप्रकाश देश के आजाद होने के बाद भी कांग्रेस सरकार की नीतियों के खिलाफ मोर्चा खोले रहे। देवेंद्र सिंह अवाना ने कहा की सत्तर के दशक में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अराजकता फैलाई तो लोकनायक जयप्रकाश नारायण की अगुआई में देश में बड़ा आंदोलन हुआ। देश में इमरजेंसी लगाई गई पर आंदोलनकारियों के हौंसले बुलंद रहे। उन्होंने कहा कि वह जेपी का कुशल नेतृत्व ही था (शेष पृष्ठ-4 पर)

सत्र 2025-26 के लिए एडमिशन प्रक्रिया शुरू
स्कूल कोड 09100110910
सरस्वती ग्लोबल स्कूल
सेक्टर 22 नोएडा
फ़ोन .08750611103

गठबंधन की जीत

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में चुनाव के बाद आए एग्जिट पोल में त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन जब मंगलवार को चुनाव परिणाम सामने आए तो जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने स्पष्ट जनादेश दिया। चुनावों में नेशनल कॉन्फ्रेंस व कांग्रेस गठबंधन को निर्णायक जीत मिली है। निश्चय ही पांच साल पुराने इस केंद्र शासित प्रदेश के लिये यह एक नई शुरुआत है। जम्मू-कश्मीर में दस साल बाद हुए विधानसभा चुनावों में मतदाताओं ने खंडित जनादेश देने के बजाय एक स्थिरता को चुना। उन्होंने राजनीतिक जोड़-तोड़ की किसी भी संभावना को खारिज कर दिया, जैसा कि एग्जिट पोल में त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे। इस बीच उपराज्यपाल द्वारा नियुक्त होने वाले पांच विधायकों का सवाल भी उठा, जिनके पास मतदान का अधिकार होगा। बहरहाल, अब विजयी गठबंधन और केंद्र सरकार के लिये असली परीक्षा की शुरुआत हो रही है। इसमें सत्ता सौंपने के लिये बातचीत की प्रक्रिया भी शामिल होगी। जनादेश के बाद केंद्रशासित प्रदेश में विश्वास बहाली प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि उपराज्यपाल व निर्वाचित सरकार के बीच किसी तरह का टकराव पैदा न हो। भरोसा किया जाना चाहिए कि जनादेश का सम्मान किया जाएगा। हम उम्मीद करें कि अतीत की अप्रिय स्थितियों की छाया वर्तमान लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर नजर नहीं आएगी। आशा की जानी चाहिए कि पूर्ववर्ती राज्य के दौरान हिंसा, क्षेत्रीय विभाजन, सांप्रदायिक तनाव व अलगाव की धारणाएं अतीत की बातें बन जाएं। वे नए जनादेश की आगे की यात्रा में बाधक नहीं बनेंगी। हालिया चुनाव के दौरान मतदाताओं के उत्साह व लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति ने सुखद अहसासों को पुष्ट किया है। अच्छी बात है कि क्षेत्र में लंबे समय बाद चुनाव बहिष्कार और चुनावी प्रक्रिया के प्रति अवमानना का साया हट गया है। चुनाव अभियान के दौरान मतदाताओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने आशा जगायी है कि घाटी में लोकतांत्रिक परंपराएं समृद्ध होंगी। भारतीय संघ के हिस्से के रूप में जम्मू-कश्मीर में स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा सशक्त हो, यह प्रयास केंद्र सरकार की तरफ से लगातार होना ही चाहिए। यह अच्छी बात है कि केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद अब स्थितियां सामान्य हुई हैं। पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान भी मतदाताओं ने उत्साह से मतदान में भाग लिया था। वैसा ही उत्साह इस विधानसभा चुनाव के दौरान भी देखा गया। यह अच्छा है कि जम्मू-कश्मीर में जिस त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे, वास्तविकता ठीक उसके विपरीत रही। जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने एक तरह से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी को सिरे से खारिज कर दिया। यहां तक कि पीडीपी सुप्रीमो महबूबा मुफ्ती की बेटी भी चुनाव हार गई। भाजपा को जम्मू में जरूर बढ़त मिली मगर घाटी में वह खाता नहीं खोल सकी। जिसको लेकर सवाल उठाये जा रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर नेशनल कान्फ्रेंस व कांग्रेस ने मिलकर पूर्ण बहुमत से अधिक सीटें जीत ली हैं। बहरहाल, नई सरकार बनाने के लिये मतदाताओं द्वारा दिए गए संदेश को संवेदनशील ढंग से समझने की जरूरत है। जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक तकरार से हटकर कोशिश कश्मीरी जनमानस के मन को पढ़ने की हो। ध्यान रखा जाए कि वहां के लोग वास्तव में क्या चाहते हैं। निश्चित रूप से जम्मू-कश्मीर के लोग शेष देश की तरह महंगाई व बेरोजगारी की समस्या से दो चार हैं। उनकी समस्याओं का तार्किक समाधान तलाशना चाहिए। इस सीमावर्ती क्षेत्र की संवेदनशीलता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्हें वे हक दिए जाने चाहिए जो उनके जीवन में सुधार लाने में सहायक बन सकें। निश्चित रूप से अनुभवी राजनीतिक पार्टियों नेशनल कान्फ्रेंस व कांग्रेस के गठबंधन के लिये लिये सत्ता की बागडोर संभालना कोई नई बात नहीं है। लेकिन उन्हें इस क्षेत्र की बदली हुई आवश्यकताओं को पहचानना होगा। निश्चित रूप से अब गलतियों की पुनरावृत्ति की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। केंद्र सरकार को स्वीकारना चाहिए कि इस केंद्र शासित प्रदेश में राज्य बहाली की मांग एक वैध जन आकांक्षा है। लेकिन इसे राजनीतिक बयानबाजी से परे रखना होगा। साथ ही सामाजिक एकजुटता और आर्थिक समृद्धि के लिये काम करना होगा। जिससे घाटी के लोग देश की मुख्यधारा से जुड़ सकें।

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि सतीजी ने देखा, अनेकों प्रकार के सुंदर विमान आकाश में चले जा रहे हैं, देव-सुन्दरियाँ मधुर गान कर रही हैं, जिन्हें सुनकर मुनियों का ध्यान छूट जाता है॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी। पिता जग्य सुनि कछु हरषानी॥
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं। कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं॥

सतीजी ने (विमानों में देवताओं के जाने का कारण) पूछा, तब शिवजी ने सब बातें बतलाईं। पिता के यज्ञ की बात सुनकर सती कुछ प्रसन्न हुईं और सोचने लगीं कि यदि महादेवजी मुझे आज्ञा दें, तो इसी बहाने कुछ दिन पिता के घर जाकर रहूँ॥

पति परित्याग हृदयँ दुखु भारी। कहइ न निज अपराध बिचारी॥
बोली सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी॥

क्योंकि उनके हृदय में पति द्वारा त्यागी जाने का बड़ा भारी दुःख था, पर अपना अपराध समझकर वे कुछ कहती न थीं। आखिर सतीजी भय, संकोच और प्रेमरस में सनी हुई मनोहर वाणी से बोलीं- ॥

दो0-पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ॥

हे प्रभो! मेरे पिता के घर बहुत बड़ा उत्सव है। यदि आपकी आज्ञा हो तो हे कृपाधाम! मैं आदर सहित उसे देखने जाऊँ॥

(क्रमशः...)

हिंसा से नहीं विकास से होगा नक्सलवाद का खात्मा

लोकतंत्र का रास्ता छोड़ कर हथियारों के बल पर क्रांति लाने का ख्वाब पाले नक्सलियों को इसकी कीमत अपने खून से लगातार चुकानी पड़ रही है। हथियारों के बल पर हिंसा के जरिए दहशत फैलाने वाले नक्सलियों को यह समझ में नहीं आया कि क्रांति वहां होती है, जहां राजशाही या तानाशाही का शासन हो। लोकतंत्र में लोकतांत्रिक तरीकों से अपनी मांग मनवाई जा सकती है। इसका सीधा रास्ता है चुनाव की प्रक्रिया के जरिए अपने मनपसंद प्रतिनिधियों को चुनना और कानून बनवाना। इसके विपरीत हथियारों के बलबूते हिंसा के रास्ते पर चलने का नतीजा खून-खराबे के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। नक्सली प्रभावित इलाकों में सुरक्षा बलों की लगातार कसती जा रही घेराबंदी में बड़ी तादाद में युवा नक्सलियों की जान जा रही है। छत्तीसगढ़ में नारायणपुर-दंतेवाड़ा सीमा के पास सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के साथ जंगल में हुई मुठभेड़ में 32 माओवादियों को मौत के घाट उतार दिया।

अब तक ऐसी सैकड़ों मुठभेड़ों में भटके हुए युवा हजारों की संख्या में अपनी जान गंवा चुके हैं। सुरक्षा बलों की संख्या और मजबूती के सामने नक्सली कहीं नहीं टिक सकते। यह जानते हुए भी नक्सलवाद एक हारी हुई लड़ाई है, गुमराह नक्सली जान देने पर आमदा हैं। इससे ज्यादा अफसोसजनक बात क्या हो सकती है, बदलाव के लिए जिन युवाओं के हाथों में कलम, कम्प्युटर या ऐसे ही समाज और राष्ट्रनिर्माण के उपकरण हो सकते हैं, उनके हाथों में हथियार हैं। इसमें भी उन्हें कहीं चैन-सुकून नहीं है। पुलिस की गोली जंगलों में कब उनका काम तमाम कर दे, इसका डर उन्हें दिन-रात सताता रहता है। परिवार और समाज से दूर यायावरों की तरह जंगलों में भटकने वाले नक्सलियों पर हर वक्त मौत का साया मंडराता रहता है।

देश की आजादी को 75 साल से ज्यादा हो गए। देश में बदलाव लाने के लिए नक्सलियों के हिंसात्मक आंदोलन को भी 6 दशक से ज्यादा का समय हो गया। नक्सलियों का दायरा लगातार सिकुड़ता जा रहा है। कभी आठ-दस राज्यों में प्रभाव रखने वाले नक्सलियों का दायरा सिमटता हुआ दो-तीन राज्यों में रह गया। देश की पुलिस और सुरक्षा बलों की संयुक्त और सशक्त कार्रवाई के सामने नक्सली बौने साबित हुए हैं। इस वर्ष अब तक दंतेवाड़ा और नारायणपुर समेत सात जिलों वाले बस्तर क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने अलग-अलग मुठभेड़ों में 171 माओवादियों को मार गिराया है। नक्सलवाद की शुरुआत पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गांव नक्सलबाड़ी से हुई थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता कानू सान्याल और चारू माजूमदार ने सरकार के खिलाफ 1967 में एक मुहिम छेड़ी थी। देखते ही देखते ये एक आंदोलन बन गया और चिंगारी फैलने लगी। इस आंदोलन से जुड़े लोगों ने खुद सरकार के खिलाफ हथियार उठा लिए। सरकार के खिलाफ ये विद्रोह उन किसानों का था, जो जमींदारों के अत्याचार से परेशान हो चुके थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि जंगलों में पैतृक अधिकारों से वंचित आदिवासियों ने सरकारी तंत्र के जुल्म-सितम से तंग आकर कोई विकल्प नहीं देख कर नक्सली विचारधारा का दामन थामा।

अब तक ऐसी सैकड़ों मुठभेड़ों में भटके हुए युवा हजारों की संख्या में अपनी जान गंवा चुके हैं। सुरक्षा बलों की संख्या और मजबूती के सामने नक्सली कहीं नहीं टिक सकते। यह जानते हुए भी नक्सलवाद एक हारी हुई लड़ाई है, गुमराह नक्सली जान देने पर आमदा हैं।

राज्यों की सरकार ने दशकों तक इन इलाकों में विकास को तरजीह नहीं दी। इससे नक्सलियों के कुप्रचार का रास्ता और भी आसान हो गया। यही वजह रही कि पश्चिमी बंगाल से शुरु हुआ नक्सलवाद सीमावर्ती राज्यों में फैलता चला गया। बीते दशकों के दौरान नक्सलियों और सुरक्षाबलों को भारी जनहानि उठानी पड़ी। नक्सलियों के प्रभाव वाले क्षेत्रों में विकास कार्य ठप्प पड़ गए। इसका फायदा उठा कर कट्टर नक्सलियों को युवाओं को बहकाने का मौका मिल गया। नक्सलवाद की समस्या से निपटने के लिए केंद्र और राज्यों ने दो स्तरीय नीति बनाई। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के राहत पैकेज और हिंसा करने वालों के प्रति सख्ती की नीति अपनाई। इसी के तहत राज्यों में आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को अनुग्रह राशि देने का प्रावधान किया गया। इनके पुनर्वास की योजना को मंजूरी दी गई। विवाह करने के लिए भी राशि का प्रावधान किया गया ताकि युवा हिंसा का रास्ता छोड़ कर परिवार-समाज के साथ सामान्य जीवन बिता सकें। इसके अलावा केंद्र और राज्य संयुक्त तौर पर नक्सलियों से निपटने की रणनीति पर लगातार कार्यरत हैं। नक्सलियों के राहत पैकेज की रफ्तार बेशक धीमी हों, किन्तु इसका फायदा उठा कर अब तक बड़ी संख्या में युवा हथियार छोड़ कर सामान्य जीवन व्यतीत करने में सफल रहे हैं।

नक्सलियों पर सुरक्षा बलों पर दवाब के साथ जरूरत इस बात की है कि विकास की रफ्तार तेज की जाए। नक्सलवाद के जड़ सहित खात्मे के लिए दवाब और विकास की रणनीति जरूरी है। सच्चाई यह भी है कि नक्सल प्रभावित राज्यों में जिस तेजी से विकास होना चाहिए था, वह ऊंट के मुंह में जीरा साबित हुआ है। नक्सल प्रभावित इलाके आज भी पानी, बिजली, स्कूल-अस्पताल और बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जूझ रहें है। पिछड़ेपन के ऐसे हालत नक्सलवाद के कुप्रचार का रास्ता आसान बनाते हैं। दशकों तक राज्यों में नक्सली हिंसा की मूल वजह भी विकास में पिछड़ापन रही है। इसके अलावा सरकारी स्तर पर भ्रष्टाचार और लालफीताशाही ने नक्सलवाद की आग में घी का काम किया है। ऐसे हालात ने नक्सली विचारधारा को पनपने और फलने-फूलने के लिए वातावरण तैयार किया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विकास का आकर्षण नक्सलियों को हथियार डालने के लिए प्रेरित करेगा। देश के अन्य हिस्सों की तरह दुगर्म नक्सली इलाकों में विकास की रफ्तार तेज करनी होगी। नक्सली क्षेत्रों में समर्पण करने वाले नक्सलियों के लिए पैकेज को प्रचार माध्यमों के जरिए प्रभावी बनाना होगा। राहत पुनर्वास पैकेज की जानकारी नही होना भी नक्सलियों के मुख्यधारा में शामिल नहीं होने में प्रमुख बाधा बनी हुई है। इन बाधाओं को हटा कर ही देश के नक्सल प्रभावित राज्यों में अमन-चैन कायम किया जा सकता है।

- योगेन्द्र योगी

स्वर्ण ऋण के प्रति बढ़ता भारतीयों का रुझान

किसी भी देश के आर्थिक विकास को गति देने हेतु पूंजी की आवश्यकता रहती है। तेज आर्थिक विकास के चलते यदि किसी देश में वित्तीय बचत की दर कम हो तो उसकी पूर्ति ऋण में बढ़ोत्तरी से की जा सकती है। भारत में ऋण सकल घरेलू अनुपात अन्य विकसित एवं कुछ विकासशील देशों की तुलना में अभी बहुत कम है। परंतु, हाल ही के समय में भारत का सामान्य नागरिक ऋण के महत्व को समझने लगा है एवं भौतिक संपति के निर्माण में अपनी बचत के साथ साथ ऋण का भी अधिक उपयोग करने लगा है। कुछ बैंक सामान्यजन को ऋण प्रदान करने हेतु प्रतिभूति की मांग करते है। भारत में सामान्यजन के पास स्वर्ण के रूप प्रतिभूति उपलब्ध रहती है अत: स्वर्ण ऋण बहुत अधिक चलन में आ रहा है। विशेष रूप से गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा ऋण की प्रतिभूति के विरुद्ध स्वर्ण ऋण आसानी से उपलब्ध कराया जा रहा है। भारत में तेजी से बढ़ रहे स्वर्ण ऋण के कारणों एवं कारकों का वर्णन इस लेख में किया गया है।

भारत में वित्तीय वर्ष 2022-23 की प्रथम तिमाही में विभिन्न गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा 39,687 करोड़ रुपए के स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए गए थे, स्वीकृत की जाने वाली यह राशि वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही में बढ़कर 62,835 करोड़ रुपए हो गई एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में और आगे बढ़कर 79,218 करोड़ रुपए हो गई। गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में स्वर्ण ऋण के मामले में 26 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि दर हासिल की है जबकि अन्य प्रकार के ऋणों में इसी अवधि के दौरान औसत वृद्धि दर 12 प्रतिशत की रही है। भारतीय नागरिक स्वर्ण ऋण के प्रति बहुत अधिक आकर्षित हो रहे हैं। आज भारत के विभिन्न गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों एवं विभिन्न बैंकों द्वारा भारी मात्रा में स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए जा रहे हैं। अगस्त 2024 माह में बैंकों एवं गैर बैकिंग वित्तीय कम्पनियों ने मिलकर 41 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करते हुए 1.4 लाख करोड़ रुपए के स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए हैं। आज गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के कुल ऋण में स्वर्ण ऋण का प्रतिशत में हिस्सा सबसे अधिक है, दूसरे स्थान पर स्कूटर एवं चार पहिया वाहनों के लिए प्रदान किए गए ऋणों का ऋण हैं, इसके बाद तीसरे स्थान पर व्यक्तिगत ऋण 14 प्रतिशत के भाग के साथ है एवं इसके बाद जाकर गृह ऋण का नम्बर आता है जो कुल ऋण का 10 प्रतिशत भाग है। बैकों एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले स्वर्ण ऋण पर पूंजी पर्याप्तता सम्बंधी शिथिल नियमों का पालन करना होता है। अन्य प्रकार के ऋणों की तुलना में स्वर्ण ऋण पर जोखिम का भार (रिस्क वेट) तुलनात्मक रूप से कम रहता है। इससे बैंक एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियां भी स्वर्ण ऋण प्रदान करने की ओर आकर्षित होते हैं।

यहां स्वाभाविक रूप से प्रश्न उभरता है कि पिछले लगभग 3 वर्षों के दौरान भारत के नागरिकों में स्वर्ण ऋण के प्रति इतना रुझान क्यों बढ़ा है? भारतीय रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण के भंडार बढ़कर 822 मेट्रिक टन से भी अधिक हो गए हैं परंतु विश्व स्वर्ण काउन्सिल के एक अनुमान के अनुसार, भारतीय नागरिकों के पास स्वर्ण के भंडार बढ़कर 25000 टन से भी अधिक के हो गए हैं, जिनकी बाजार कीमत वर्ष 2020 में 109 लाख करोड़ रुपए की थी। भारत में नागरिकों के पास स्वर्ण भंडार विश्व के कुल स्वर्ण भंडार का 11 प्रतिशत है। भारत में प्रतिवर्ष 750 से 800 टन स्वर्ण का आयात होता है और पिछले 25 वर्षों के दौरान भारत में 17,500 टन स्वर्ण का आयात हुआ है और मार्च 2019 से मार्च 2024 के दौरान भारत में स्वर्ण भंडार 40 प्रतिशत से बढ़ गए हैं। दरअसल, भारत में दीपावली (धन तेरस) के शुभ अवसर पर स्वर्ण की खरीद को शुभ माना जाता है एवं मध्यमवर्गीय परिवार भी धन तेरस के दिन स्वर्ण की खरीद प्रति वर्ष करते हैं। इससे भारत के करोड़ों परिवारों के पास स्वर्ण का स्टॉक उपलब्ध रहता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों द्वारा स्वर्ण ऋण प्रदान करने के सम्बंध में नियमों को बहुत सरल बनाया है एवं अब भारतीय नागरिकों को स्वर्ण के स्टॉक के विरुद्ध ऋण बहुत ही आसान शर्तों पर उपलब्ध होने लगा है। भारत में प्रचिलित परम्पराओं के अनुसार मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा स्वर्ण को बेचना शुभ नहीं माना जाता है जबकि स्वर्ण की खरीद को शुभ माना जाता है। अत: स्वर्ण को बाजार में बेचने के स्थान पर स्वर्ण को बैंक में गिरवी रखकर उसके विरुद्ध बैंक से आसानी से स्वर्ण ऋण प्राप्त करना ज्यादा उचित माना जाता है।

और फिर, हाल ही के वर्षों में भारतीय शेयर बाजार बहुत ही तेज गति से आगे बढ़ रहा है और विभिन्न कम्पनियों के शेयरों में किए गए निवेश पर 12 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक की आय प्रतिवर्ष होने लगी है। इससे बहुत बड़ी मात्रा में भारतीय नागरिक (खुदरा निवेशक) शेयर बाजार में निवेश करने हेतु आकर्षित हुए हैं। चूंकि स्वर्ण ऋण बहुत ही आसानी से उपलब्ध होने लगे हैं अत: मध्यमवर्गीय परिवार स्वर्ण ऋण लेकर पूंजी बाजार में निवेश अथवा चार पहिया वाहन खरीदने एवं गृहों का निर्माण करने लगे हैं। स्वर्ण ऋण की राशि आसान किश्तों में जमा करानी होती है, अत: स्वर्ण लेने वाले नागरिकों पर कोई बहुत अधिक दबाव भी नहीं पड़ता है। उक्त कारणों के चलते भारत में हाल ही वर्षों में स्वर्ण ऋण प्राप्त करने वाले नागरिकों में अतुलनीय वृद्धि दर्ज हुई है।

चूंकि बैंकों एवं गैर गैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा प्रदान किया जा रहे स्वर्ण ऋण में वृद्धि दर अतुलनीय रही है अत: भारतीय रिजर्व बैंक ने स्वर्ण ऋण स्वीकृति करने सम्बंधी नियमों के कठोर अनुपालन के लिए गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों को हाल ही में चेताया है ताकि इन बैंकों द्वारा स्वर्ण ऋण स्वीकृत करने में किसी भी प्रकार की ढील नहीं दी जा सके तथा स्वर्ण ऋण के खाते गैर निष्पादनकारी आस्तियों (एनपीए) में परिवर्तित नहीं हों। यदि बैंकों एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्वर्ण ऋण सम्बंधी नियमों का अनुपालन अक्षरशः किया जाता है तो स्वर्ण ऋण खाते का गैर निष्पादनकारी आस्ति में परिवर्तितत होना सम्भव नहीं है। हां, यदि असली स्वर्ण के स्थान पर नकली स्वर्ण के विरुद्ध ऋण स्वीकृत किया जाता है तो स्वर्ण ऋण खाते की गैर निष्पादनकारी आस्ति में परिवर्तित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए स्वर्ण ऋण प्रदान करते समय बैंकों को ऋण असली है इसकी पक्की जानकारी होना आवश्यक है। इसके लिए स्वर्ण की जांच पुख्ता तरीके से की जानी चाहिए।

- प्रहलाद सबनानी
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक

राशिफल

आश्विन शुक्ल पक्ष : नवमी — **(विक्रम संवत् 2081)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
भावनाओं में बहकर कोई निर्णय न लें। स्वास्थ्य ठीक है। प्रेम, संतान भी अच्छा है।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
भूमि, भवन व वाहन की खरीदारी संभव है लेकिन थोड़ा गृहकलह भी संभव है। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। प्रेम, संतान मध्यम।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
नाक, कान व गला की थोड़ी सी परेशानी हो सकती है। व्यापारिक स्थिति आपकी अच्छी है।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
धन का आवक बढ़ेगा। कुटुंबों में वृद्धि होगी। जुबान अनियंत्रित न होने दें। पूंजी का निवेश अभी दबा कर रखें।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
अच्छे दिनों की ओर आप जा रहे हैं। स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम। ऊर्जा का स्तर घटा हुआ रहेगा। प्रेम, संतान मध्यम रहेगा।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
बचकर पार करें। चोट-चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य मध्यम, प्रेम-संतान मध्यम है।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
आनंददायक दिन रहेगा। प्रेमी-प्रेमिका की मुलाकात हो सकती है। जो लोग विवाहित हैं उन्हें जीवनसाथी का सानिध्य मिलेगा।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
शत्रुओं पर विजय पाएंगे। गुण-ज्ञान की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम रहेगा। प्रेम, संतान में दूरी रहेगी।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
चिंताकारी सृष्टि का सृजन हो रहा है। मन खिन्न रहेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। प्रेम-संतान बहुत अच्छा।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम-संतान का साथ होगा। व्यापार बहुत अच्छा।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, द)
व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम-संतान अच्छा।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, वा, चि)
आय के नवीन सोर्स बनेंगे। यात्रा का योग बनेगा। पुराने सोर्स से भी पैसे आएंगे। स्वास्थ्य, प्रेम व व्यापार बहुत अच्छा।

रावण, अंगद संवाद से झूमे श्रोता

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। श्री आदर्श रामलीला कमेटी मीडिया प्रभारी पंडित कर्मवीर आर्य ने बताया कि कल श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर में रामलीला मंचन आरती होने की शुरुआत से हुई और आज मंचन में रावण-अंगद संवाद, लक्ष्मण मेधनाथ युद्ध, लक्ष्मण मुर्क्षा, हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाना, काल नैमी संवाद, भरत-हनुमान संवाद रामलीला मंचन करने आये कलाकारों के ज़रिये बड़े ही मार्मिक ढंग से दृश्य प्रस्तुत किया गया दर्शकों ने बड़े ही भाव विभोर होकर कलाकारों की कलाकारी को सराहा रामलीला मैदान बराही मंदिर पर श्री आदर्श रामलीला अध्यक्ष सतवीर भाटी ने कहा मेला और रामलीला मंचन देखने के लिये रोज़ भारी संख्या में दर्शक पहुँच रहे है। मेले में बच्चे झूला-झूलने से लेकर खाने के लिए स्वादिष्ट व्यंजन का आनन्द लिया और आये हुए श्रद्धालु भक्त मेले में ख़रीदारी घरेलू सामनों के स्टालों से ख़रीद रहें है।

रामलीला कमेटी महासचिव सत्यपाल शर्मा ने बताया कि मेला और रामलीला मंचन बड़े ही व्यवस्थित रूप से चल रहा है मेले की व्यवस्था और

मेले में आये हुए रामलीला मंचन देखने के लिये दूर दराज से आये लोगों को कार पार्किंग व्यवस्था के साथ लोगो के लिये सुरक्षा व्यवस्था पुलिस प्रशासन (मेला पुलिस चोकी) और श्री आदर्श रामलीला के पदाधिकारी कार्यकर्ता पूरी निष्ठा से कार्य में लगे है। रामलीला मंचन पर मुख्यरूप से अध्यक्ष सत्यवीर भाटी, भूदेव शर्मा, मूलचंद शर्मा, महासचिव सत्यपाल शर्मा, ओमवीर बैसला, अनिल भाटी, लक्ष्मण सिंघल, अजय शर्मा एडवोकेट, मीडिया प्रभारी कर्मवीर आर्य, सह मीडिया प्रभारी मोहित शर्मा, सह मीडिया प्रभारी दिनेश शर्मा, कोषाध्यक्ष विशाल गोयल, के पी कसाना, बिजेन्द्र सिंह भाटी, सोविन्द्र सिंह भाटी, सुनील चावड़ा, बिजेंद्र मुदगल, सचिन जिन्दल, सुभाष शर्मा, राजेश ठेकेदार, विनोद भाटी, रघुवीर सिंह जेसीबी वाले, विनोद पंडित, अशोक शर्मा, केडी गुर्जर , अमन त्यागी, अवनेन्द्र यादव, चेतन शर्मा, अनिल आर्य, रविन्द्र मास्टर, शिव किशोर विशाल कुमार सुभाष शर्मा जीन्स वाले चेतन शर्मा अरुण शर्मा नवीन देवधर ओमपाल ठाकुर डॉक्टर ओमप्रकाश शर्मा योगेश अग्रवाल चिराग गोयल उज्जवल गर्ग तुषार अग्रवाल अनिल शर्मा सचिन शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

नवरात्रों के दौरान सिटी हार्ट में हुआ नौ देवियों का पूजन

ग्रेटर नोएडा। दादरी कटहरा रोड़ स्तिथ सिटी हार्ट अकादमी स्कूल में नौ देवियों का पूजन हुआ। स्कूल की प्रधानाचार्या रुचि भाटी ने बताया कि नवरात्रों के दौरान स्कूल में नौ देवियों की पूजा की गई।

स्कूल की छात्राएं देवियों के अवतार धारण कर उनकी वेशभूषा में स्कूल पहुँची। अष्टमी के दिन आज स्कूल में दुर्गा पूजन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में स्कूल के डायरेक्टर संदीप भाटी ने सभी देवियों की विधिवत तरीके से पूजा-अर्चना कर सभी की आरती की।

रुचि भाटी ने सभी को प्रसाद वितरण किया। सभी के लिए देवियों से मंगल कामना की प्रार्थना की। कार्यक्रम को कराने का उद्देश्य बच्चों को अपनी संस्कृति के प्रति जगरुख करना है।

नौ देवियों की पूजा का कार्यक्रम शीतल वर्मा, नीतू, निधि वर्मा, कपिल भाटी, चंचल चंदेल, नवनीत, तरुण रोषा की देख रेख में सम्पन हुआ। इस दौरान समस्त अध्यापक अध्यापिकाएं व बच्चे मौजूद रहे।

भाजपा नेता ने दी विधायक को बधाई

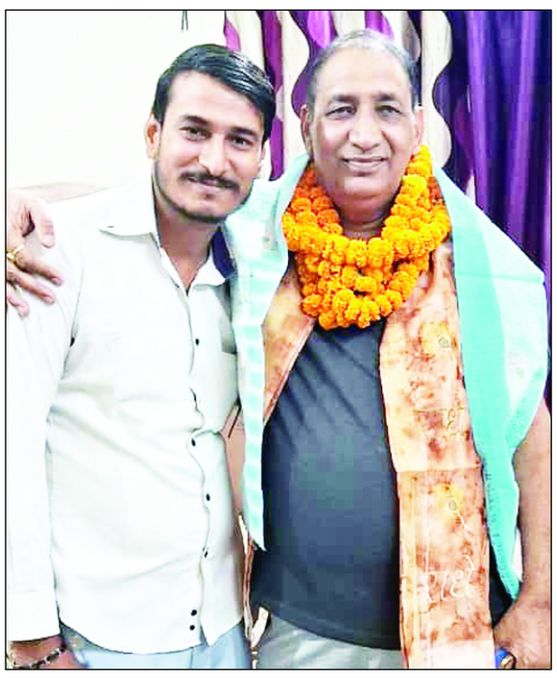

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। दादरी के विधायक तेजपाल सिंह नागर को विधानसभा की लोकलेखा समिति का सदस्य नामित किए जाने पर भाजपा नेता बृजेश ठाकुर ने बधाई दी है।

कल भाजपा के उपाध्यक्ष बृजेश ठाकुर विधायक के दादरी स्थित आवास पहुंचकर उन्हें माला पहनाकर एवं स्वागत किया। इस अवसर पर भाजपा नेता बृजेश ठाकुर ने कहा कि तेजपाल सिंह नागर एक ऐसे विधायक हैं जो सभी की बातें सुनकर उसकी बड़ी ही सरलता के साथ निराकरण करते हैं। उन्होंने कहा कि जब से तेजपाल सिंह नागर दादरी विधानसभा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तभी से पूरे विधानसभा क्षेत्र के गांव का आवश्यकताओं का विकास तेज कैसे हो रहा है।

पांच दिवसीय रोज़गार परक प्रशिक्षण का हुआ समापन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ के अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, गौतम बुद्धनगर द्वारा 100 दिवसीय कार्य-योजना के अंतर्गत उद्यान विषयक ऑयस्टर एवं बटन मशरूम उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकी रोजगार के अवसर एवं उद्यमिता विकास पर पांच दिवसीय रोज़गार परक प्रशिक्षण कार्यक्रम 5 अक्टूबर से प्रारंभ किया गया था। जिसका समापन कल (10 अक्टूबर) को हुआ। इस प्रशिक्षण अवधि में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ विपिन कुमार द्वारा प्रशिक्षार्थियों द्वारा तैयार किए गए ऑयस्टर एवं बटन मशरुम की सामग्री प्रदर्शन, कम्पोस्ट का उपचार, पीपी बैग की तैयारी, बीज स्पानिंग प्रक्रिया, आदि तकनिकी विषयों की फीडबैक प्रशिक्षार्थियों से प्राप्त की गई एवं प्रशिक्षार्थियों को मार्गदर्शित कर मशरूम उत्पादन में रोजगार के अवसर एवं उद्यमिता विकास पर विशेष जानकारी दी।

इसी क्रम में केंद्र, के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विनीता सिंह (ग्रह विज्ञान) एवं प्रभारी 100 दिवसीय कार्ययोजना, वैज्ञानिक डॉ बोनिका पंत (मतस्य विज्ञान), वैज्ञानिक श्री कुंवर घनश्याम (पशुपालन विज्ञान) ने प्रशिक्षार्थियों द्वारा तैयार किए गए मशरुम सामग्री प्रदर्शन कार्यों की प्रशंसा कर उत्साह-वर्धन किया।

वैज्ञानिक डॉ सुनील प्रजापति (उद्यान विज्ञान) द्वारा प्रशिक्षण अवधि में ऑयस्टर एवं बटन मशरूम उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकी विषयक पर सिद्धांत एवं प्रायोगिक माध्यम द्वारा प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

समापन सत्र में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मोहन सिंह (मृदा विज्ञान) द्वारा प्रशिक्षार्थियों को संबोधित कर, बटन मशरूम में कम्पोस्टिंग एवं केसिंग बनाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व, खाद के विशेष महत्व को बताया गया। अंत में प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। प्रशिक्षार्थियों द्वारा इस सफल प्रशिक्षण हेतु केंद्र के अध्यक्ष एवं वैज्ञानिकों का धन्यवाद प्रस्तुत किया गया।

सीटू ने किया भण्डारे का आयोजन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा वेस्ट, पथ विक्रेता कर्मकार यूनियन की बाजार कमेटी यूसुफपुर चक शाहबेरी ने आज सीटू नेता नरेंद्र पांडे, कमेटी के पदाधिकारी विकास गुप्ता, रुदल, आरपी सिंह, हरवीर, उपेंद्र गुप्ता, राजेश चौधरी, टीटू, पवित्र देवी, रोमा शर्मा, शिव प्रसाद, लंबू, चंदन, विश्वनाथ आदि के नेतृत्व में भंडारे का आयोजन किया गया। सीटू नेता नरेंद्र पांडे व गंगेश्वर दत्त शर्मा ने बताया कि भंडारे में कई शो जरूरतमंद लोगों को भोजन कराया गया। साथ ही उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम हमारी कमेटी समय-समय पर करती रहती है।

मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि पर गोष्ठी

नोएडा (चेतना मंच)। गांव झुंडपुरा लॉर्ड कृष्णा मॉडर्न स्कूल में समाजवादी आंदोलन के महानायक नेता जी मुलायम सिंह यादव की दूसरी पुण्यतिथि पर सपा कार्यकर्ताओं के साथ देवेन्द्र अवाना, देवेंद्र गुर्जर ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके जीवन संघर्ष पर विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया।

इस मौके पर वरिष्ठ सपा नेता देवेन्द्र सिंह अवाना ने कहा भारतीय राजनीतिज्ञ, समाजवादी व्यक्ति और समाजवादी पार्टी के संस्थापक थे। छह दशक से अधिक के अपने राजनीतिक जीवन के दौरान, उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में तीन कार्यकालों तक सेवा की और भारत सरकार में केंद्रीय रक्षा मंत्री के रूप में भी कार्य किया। सपा कार्यकर्ताओं में उनके विचारों को आत्मसात करने की शपथ ली।

विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए पूर्व अध्यक्ष नोएडा विधानसभा देवेन्द्र गुर्जर ने कहा कि देवेगौड़ा सरकार में रक्षा मंत्री के रूप में मुलायम सिंह यादव ने अपने कार्यकाल के दौरान हमलों के जवाब में भारतीय सेना को पाकिस्तान में घुसने का आदेश दिया था।

इस मौके पर हीरालाल यादव, भीष्म यादव, देवेंद्र सिंह अवाना, जगत चौधरी, देवेन्द्र गुर्जर, मोहसिन सैफी, साहिल खान विक्की तंवर एल के मिश्रा देव यादव ,रमेश चौधरी, दाताराम पाल, सतीश शर्मा, राजेंद्र यादव, चरण सिंह राजपूत, रोशन चौधरी, फूलसिंह नम्बरदार,मौ यामीन गौरव मुखिया, संदीप कुमार,कपिल अवाना, अनिल अवाना, उस्मान भड़ाना मंगल यादव, प्रेम, आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जनचेतना यात्रा आयोजित

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। किसान सभा की जनचेतना यात्रा असतोली खानपुर लुक्सर में घर घर पर्चे बांटते हुए खत्म हुई। जन चेतना यात्रा 14 अक्टूबर तक चलेगी। कलेक्ट्रेट का घेराव करने का नारा दिया गया है डीएम गौतमबुद्धनगर हाई पावर कमेटी के सदस्य रहे थे। परंतु कमेटी की रिपोर्ट आज तक सार्वजनिक नहीं की गई है।

जन चेतना यात्रा के संयोजक शिशांत भाटी ने कहा कि क्षेत्र के किसानों में 10 प्रतिशत के मुद्दे को लेकर आक्रोश है सरकार जानबूझकर किसानों की इस सबसे बड़ी मांग की उपेक्षा कर रही है क्षेत्र में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। सरकार को तुरंत इस मांग पर कार्रवाई करनी चाहिए अन्यथा क्षेत्र में किसानों का आक्रोश कभी भी बेकाबू हो सकता है। किसान सभा के संयोजक वीर सिंह नागर ने चेतना यात्रा के दौरान आज खानपुर गांव में हुई नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए कहा कि यह लड़ाई तीसरे चरण की अंतिम लड़ाई है सभी संगठन और विपक्षी पार्टियों एकजुट होकर आंदोलन में शरीक हो रही है। संचालन मनोज प्रधान ने किया।

नुक्कड़ सभा का आयोजन पप्पू ठेकेदार सुरेंद्र भाटी मनवीर खानपुर ने किया बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद रही खानपुर गांव के लोगों ने सैकड़ो लोगों को आंदोलन में शामिल करने का आश्वासन दिया। आज जन चेतना यात्रा में निशांत भाटी संदीप भाटी जोगिंदर प्रधान भगत सिंह चेची गुरप्रीत एडवोकेट सुधीर रावल अमित भाटी एवं अन्य सैकड़ो लोग शामिल रहे।

खुले में कबाड़ डालकर आग लगाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग

दादरी (चेतना मंच)। रूपवास बाईपास के आसपास लोगों ने कूड़ा करकट डालकर उसमें आग लगा देते हैं। जिसके चलते बाईपास पर चलने वाले लोगों का बुरा हाल हो रहा है। किसान नेता राजकुमार रूपवास ने कहा की रूपवास गांव के नजदीक से होकर बाईपास निकल रहा है। बाईपास से होकर हजारों वाहन रोज निकलते हैं। लेकिन बाईपास की सड़क के आसपास बाहर से लोग आकर कूड़ा करकट डालकर आग लगा देते हैं। कूड़ा करकट व कबाड़ आग लगने के कारण खतरनाक प्रदूषण फैल जाता है। जिसके चलते गांव के लोग उस जहरीले प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। प्रदूषण के कारण लोगों को सांस लेने में काफी दिक्कत होती है। और प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियों का खतरा हमेशा बना रहता है। किसान नेता राजकुमार का कहना है की अगर किसान अपने खेत में पराली जलाता है तो उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज हो जाता है। लेकिन जो लोग खुले में कबाड़ डालकर उसमें आग लग रहे हैं तो शासन व प्रशासन उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं कर रहा है। किसान नेता की शासन व प्रशासन से मांग है कि जो लोग बाईपास के आसपास का कूड़ा करकट व कबाड़ डालकर आग लगा रहे हैं।

दैनिक चेतना मंच
भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।
डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99
RNI No. 69950/98
स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।
संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी
Contact:
0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

मुलायम सिंह यादव को सपाइयों ने दी श्रद्धांजलि

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। समाजवादी पार्टी के संस्थापक एवं भारत के पूर्व रक्षामंत्री और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जी की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय उन्हें अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं एक विचार गोष्ठी का आयोजन कर उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर सपा कार्यकर्ताओ ने हवन का भी आयोजन किया। इस मौके पर जिलाध्यक्ष सुधीर भाटी ने कहा कि डॉक्टर राम मनोहर लोहिया जी के विचारों से प्रभावित होकर नेता जी ने छात्र जीवन से ही देश में समाजवादी आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया डॉ लोहिया के सपनों को साकार करने के काम किया।

उन्होंने गरीब, मजदूर, किसान, अल्पसंख्यक, दलित और पिछड़ों के हकों की लड़ाई सड़क से लेकर संसद तक लड़ी और उनके हितों के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि नेता जी ने पूरे देश में समाजवादी कि अलख जगा अमीर और गरीब के बीच खाई को पाटने का काम किया। उन्होंने देश के रक्षा मंत्री के रूप में भारतीय सेना को मजबूत करने का काम किया और सैनिकों को आवश्यक सुविधाओं के साथ-साथ सम्मान दिलाने काम किया और कहा कि नेता जी ने सदैव राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता को मजबूती प्रदान करने के लिए काम किया। हम सब को उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलते हुए समाजवादी विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लेना है। पुण्यतिथि के अवसर पर समाजवादी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं ने भारत सरकार से मुलायम सिंह यादव को भारत रत्न देने की मांग की।

इस मौके पर मुख्य रूप से पूर्व जिलाध्यक्ष फकीर चन्द नागर, पूर्व जिलाध्यक्ष इन्दर प्रधान, पूर्व चेयरमैन गजराज नागर, नरेन्द्र नागर, सुनील भाटी देवटा, जिला महासचिव सुधीर तोमर, कृष्णा चौहान, एडवोकेट रामसरन नागर, यूनुस प्रधान, परमेन्द्र भाटी एडवोकेट, मनोज भाटी एडवोकेट, औरंगजेब अली, जगवीर नम्बरदार, शशि यादव, सुरेन्द्र नागर, रोहित मत्ते गुर्जर, श्याम सिंह भाटी, कपिल ननका, सलमु खान, अमित रौनी, कमल भाटी, अकबर खान, नवीन भाटी, अजय चौधरी, विनोद लोहिया, शौकत अली चेची, अनीता चौहान, दीपक नागर, मोहित यादव, मोहित नागर, जय यादव, सीपी सोलंकी, जुगती सिंह, खुशी यादव, गजेंद्र यादव, हैप्पी पंडित, अनीस अहमद, विपिन सेन, विक्रम टाईगर, मुकेशरी,चंदन यादव, कुलदीप भाटी, सुदेश भाटी, प्रशांत भाटी, अमन नागर, राहुल चौधरी, देवेंद्र भाटी, अनिल नागर, संजय खान, दिगंबर गौतम, सत्यप्रकाश नागर, गौरव भाटी, सतीश नागर, विष्णु सिंह, बबली भाटी, सुमित पंडित, उपेंद्र यादव, लखन जाटव, आसिफ अल्वी, अशोक कुमार, सुरेन्द्र शर्मा, सद्दाम आदि मौजूद रहे।

उत्तर मध्य रेलवे
सार्वजनिक नीलामी सूचना
पत्रांकः म.रे.प्र./आगरा/डिरेलमेंट/2024 दिनांकः 07.10.2024
उत्तर मध्य रेलवे के आगरा मंडल में वृन्दावन रोड-अझई स्टेशन के Km. 1408/14-1407/34 के मध्य में 18 सितंबर 2024 को हुए डिरेलमेंट में गिरे लगभग 1665 टन (बुक्ड रेलवे रसीद के अनुसार) कोयले की नीलामी की जाएगी। यह नीलामी "जहाँ है, जिस स्थिति में है" के आधार पर होगी।
नीलामी की शर्तेः- 1. इच्छुक व्यक्ति या फर्म रूपये 50,000/- की जमानत राशि और पहचान पत्र के साथ नीलामी में भाग ले सकते है। 2. नामांकन नीलामी के दिन सुबह 11 बजे तक मथुरा में मुख्य माल पर्यवेक्षक के कार्यालय में होगा। 3. उच्चतम बोली पर कोयले को बेचा जाएगा, लेकिन आरक्षित मूल्य से कम पर नहीं। 4. सफल बोलीदाता को 10% राशि नीलामी के दिन और शेष राशि अगले दिन जमा करनी होगी। 5. संपूर्ण माल को सफल नीलामी के एक सप्ताह के भीतर हटाना अनिवार्य है। 6. रेलवे नीलामी को रद्द या अग्रसारित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।
नीलामी की तिथि- 18.10.2024, दिन-शुक्रवार
समय-12 बजे, स्थान- मथुरा मालगोदाम कार्यालय। 1767/24 FA
North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

एनईए ने दी उद्योगपति रतन टाटा को भावपूर्ण श्रद्धाजंलि

नोएडा। नौएडा एन्ट्रेप्रिनियोर्स एसोसिएशन के प्रांगण में उद्योग जगत के प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा को भावपूर्ण श्रृद्धाजंलि दी गई।

इस अवसर पर एनईए अध्यक्ष विपिन कुमार मल्हन ने कहा कि महान देश भक्त, उद्योग के क्षेत्र में नई इबारत लिखने वाले, समाज एंव देश के लिए एक अनूठी मिशाल स्थापित करने वाले महान उद्योपति रतन टाटा ने निस्वार्थ भाव से अपना जीवन राष्ट्र के विकास हेतु समर्पित किया। उनका जाना हमारे देश के लिए बहुत बडी क्षति है, उनके द्वारा राष्ट्र की अर्थव्यवथा एंव उद्योग को महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए हमेशा जाना जाएगा।

इस अवसर पर एन0ई0ए0 अध्यक्ष विपिन कुमार मल्हन, महासचिव वी0के0सेठ, वरि0 उपाध्यक्ष हरीश जोनेजा, राकेश कोहली, धर्मवीर शर्मा, उपाध्यक्ष मोहन सिंह, सुधीर श्रीवास्तव, आर.एम. जिंदल, कोषाध्यक्ष शरद चन्द्र जैन, सह. कोषाध्यक्ष संदीप विरमानी, सचिव आलोक गुप्ता, कमल कुमार, विरेन्द्र नरूला राजन खुराना, मयंक गुप्ता, पियूष मंगला, सुभाष जावा, इन्दरपाल खांडपुर, रमन वासन, हरीश कालरा, आर.के.सूरी, ओम प्रकाश, कुलदीप विर्क, प्रवीन गुप्ता उपस्थित थे।

पृष्ठ एक के शेष....

जेपीएनआईसी को...

इसके बाद अखिलेश यादव ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह सरकार इस सेंटर को बेचना चाहती है। उन्होंने कहा कि ये बैरीकेडिंग सपा के कार्यकर्ताओं को रोक नहीं पाएगी। पुलिस कब तक यहां रहेगी। जब पुलिस वहां से हटेगी तब हम वहां माल्यार्पण करेंगे।

उन्होंने मीडिया से बातचीत में बयान दिया कि ये टीन शेड लगाकर सरकार कुछ तो छिपाना चाह रही है। कहीं ऐसा तो नहीं कि बेचने की तैयारी हो, किसी को देना चाहते हो।

इसके पहले, अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जेपीएनआईसी के मेन गेट पर लगाई जा रही टिन का वीडियो शेयर करते हुए कहा है कि किसी को नमन करने या श्रद्धांजलि देने से रोकना सुसभ्य लोगों की निशानी नहीं।

उत्तर प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और सपा नेता माता प्रसाद पांडेय ने कहा, जयप्रकाश नारायण आजादी की लड़ाई में हमारे बड़े नेता थे, स्वतंत्रता सेनानी थे और उन्हें सभी पार्टियों के नेताओं का सम्मान प्राप्त है। इसलिए आज उनकी जयंती पर हम प्रतिपक्ष उनका सम्मान करने के लिए उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हैं। पिछली बार भी उन्हें(अखिलेश यादव) रोका गया था लेकिन हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष वहां गए और माल्यार्पण किया फिर चले आए। मुझे समझ नहीं आता कि केवल माल्यार्पण करने से कौन सा पहाड़ टूट जाता है? या तो उस संस्थान (जेपीएनआईसी) में कोई गड़बड़ी है जिसे बेचने का प्रयास किया जा रहा है और ये गड़बड़ उजागर न हो इसलिए ऐसी लोकतांत्रिक कार्रवाई करके उन्हें(अखिलेश यादव) जाने से रोका जा रहा है।

सीपी ने किया दो...

पुलिस आयुक्त ने बताया कि मिशन शक्ति के तहत महिला सुरक्षा को बेहतर बनाने व अपराध पर लगाम लगाने के लिए जिले में छह नए पिंक पुलिस बूथ बनाए जा रहे हैं। कमिश्नरेट के तीनों जोन में दो-दो नए पिंक बूथ बनकर तैयार है। इन बूथ में महिलाएं किसी तरह की समस्याओं की शिकायत कर सकेंगी। महिला पुलिसकर्मी त्वरित कार्रवाई कर उन्हें सुरक्षित माहौल देंगी। इसकी निगरानी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी करेंगे।

पुलिस आयुक्त ने बताया कि मिशन शक्ति के तहत बीते साल सात पिंक बूथ स्थापित किए गए थे। महिलाओं को इससे काफी मदद मिली। ऐसे में मिशन शक्ति अभियान को पर लगाने के लिए छह नए पिंक बूथ बनाए गए हैं। अब बूथ की संख्या जनपद में 13 हो जाएगी। इस बार नॉलेज पार्क, दादरी, फेज वन, सेक्टर-58, फेज दो और इकोटेक थर्ड थानाक्षेत्र में पिंक बूथ बनाए गए हैं। इसके लिए ऐसी जगह या चौकियों का चयन किया गया है जहां घनी आबादी हो महिलाओं का आवाजाही ज्यादा हो। बीते साल पुलिस कमिश्नर ने गेझा, बरौला और सेक्टर-51 चौकी में पिंक बूथ का शुभारंभ किया था। बूथ पर एक सब इंस्पेक्टर और चार महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती होगी। यहां शिकायत दर्ज कराने आने वाली महिलाएं के बैठने समेत सभी मूलभूत सुविधाएं उनके लिए उपलब्ध होंगी। फरियादी महिलाओं के लिए वाशरूम, किचन और प्राथमिक चिकित्सा की भी यहां सुविधा मिलेगी। किसी भी आपात स्थिति में महिलाएं बूथ में तैनात महिला पुलिसकर्मियों से मदद ले सकती हैं। बूथ में महिला अपराध से जुड़े सभी मामलों का निस्तारण किया जाएगा। पुलिस के लिए जरूरी सभी तरह के संचार माध्यम यहां होंगे।

जहां महिलाओं के साथ होने वाले अपराध अधिक हैं। इसके लिए पुलिस टीम ने क्राइम मैपिंग सिस्टम का सहारा लिया है। इससे चेन, पर्स व मोबाइल झपटमारी और महिला अपराध से जुड़ी घटनाओं वाले इलाके की पहचान की गई है। आगामी महीनों में ग्रेटर नोएडा वेस्ट इलाकों में भी पिंक बूथ की व्यवस्था की जाएगी। हाइवे और एक्सप्रेसवे पर भी पिंक बूथ स्थापित करने की योजना पर काम हो रहा है। जिन महिला पुलिसकर्मियों की बूथ पर तैनाती होनी है उनको पहले से ही प्रशिक्षित कर दिया गया है।

शातिर चोर...

शकील मोहम्मद, शाहनवाज उर्फ शालू के साथ मिलकर सरस्वती एनक्लेव के एक घर में लूटपाट की थी। यहां से लूटे गए आभूषणों को उन्होंने बेचकर आपस में रुपए बांट लिए थे। उसने बताया कि 5 सितंबर को उनकी पुलिस से भी मुठभेड़ हुई थी। इस मुठभेड़ में अमीर व दिलशाद उर्फ गोलू को पुलिस ने पकड़ लिया था। 10 अगस्त को उसने एक कंपनी से कॉपर के तार व चोरी किए थे। उसने बताया कि चोरी के माल को वह अपने कबाड़ी की दुकान पर खपा देता था ।

थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपी की दुकान की तलाशी लेने पर उसके यहां से दो बंडल मिग वायर बरामद हुए। आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे न्यायालय में पेश किया गया है।

जालसाज ने एटीएम...

एटीएम बदल दिया। इसके बाद वह घर वापस आ गया कुछ देर बाद उसके मोबाइल पर खाते से 15800 रूपये निकालने का मैसेज आया। उसने जब एटीएम को ध्यान से देखा तो पता चला कि उक्त व्यक्ति ने उसका एटीएम कार्ड बदल दिया था।

थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। एटीएम में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज को खंगाला जा रहा है।

प्रिपॉन्डरेंस ऑफ़ शक्ति...

विद्यार्थियों ने अपनी अनूठी प्रस्तुतियों के माध्यम से बड़े ही सुन्दर ढंग से यह संदेश प्रस्तुत किया। उनके अभिनय और नृत्य को देखकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए। मुख्य अतिथि के आगमन के साथ ही कार्यक्रम का शुभारंभ नौ देवियों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम में मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल की निदेशिका सुश्री संयोगिता शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल गुरुग्राम तथा फरीदाबाद की प्रधानाचार्या भी अतिथि के रूप में उपस्थित थी।

विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री निंदिया साकेत ने अतिथिगणों को उपहार भेंटकर उनका स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि विद्यालय प्रबंधन द्वारा विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण तथा समाज में जागृति लाने के लिए किये जाने वाले प्रयास काफी सराहनीय है। विद्यालय के कार्यकारी निदेशक लवकेश मग्गु ने अपने प्रेरक शब्दों से विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या नें कहा कि जितना सम्मान, जितनी आस्था, हम माता की मूर्तियों में रखते है, उतना सम्मान यदि नारी शक्ति को, नारी को, कन्याओं को दिया जाए तो वास्तव में शक्ति स्वरूपा माँ की आराधना होगी। स्त्री स्वयं भी अपने भीतर मौजूद स्त्री शक्ति के सांकेतिक रूप काली, पार्वती और दुर्गा को पहचानने का प्रयास करे।

शीशपंगमा चोटी...

अर्जुन ने भारतीय समयानुसार सुबह 7:45 बजे शीशपंगमा चोटी पर सफलतापूर्वक कदम रखा। इस अभियान की जानकारी चीन-तिब्बत पर्वतारोहण संघ को भी दे दी गई है। इस कठिन यात्रा के दौरान अर्जुन ने सेटेलाइट फोन के जरिए अपने पिता संजीव वाजपेयी को सफलता की सूचना दी। गौरतलब है कि शीशपंगमा चोटी पर चढ़ाई करना अत्यंत जोखिम भरा होता है, और अब तक इस चोटी को फतह करते हुए 25 पर्वतारोहियों ने अपने प्राण गंवाए हैं।

अर्जुन वाजपेयी का पर्वतारोहण का सफर संघर्षों और साहस से भरा है। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में माउंट एवरेस्ट और माउंट ल्होत्से को फतह कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सबसे कम उम्र में दो चोटियों पर चढ़ाई करने वाले पर्वतारोही के रूप में अपना नाम दर्ज कराया था। शीशपंगमा की इस विजय ने अर्जुन को देश-विदेश में एक बार फिर प्रशंसा का पात्र बना दिया है।

अर्जुन वाजपेयी का सपना है कि वह 8,000 मीटर से ऊंची दुनिया की सभी 14 चोटियों को फतह करें। विश्व भर में अब तक केवल 40 पर्वतारोहियों ने यह उपलब्धि हासिल की है, लेकिन किसी भारतीय ने अभी तक इस मुकाम को नहीं छुआ है। अर्जुन के पिता संजीव वाजपेयी ने बताया कि उनके बेटे का अगला लक्ष्य धौलागिरी चोटी पर तिरंगा फहराना है। अर्जुन अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से देश को गर्वित कर रहे हैं और हर नई चढ़ाई के साथ भारत का नाम विश्व पटल पर रोशन कर रहे हैं।

गाय के साथ...

रहा था जिसे लोगों ने दबोच लिया। पकड़े गए आरोपी ने अपना नाम पंचदेव बताया। इसके बाद थाना फेस-2 पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी पंचदेव को हिरासत में ले लिया।

इस संबंध में राजबाला सिंह ने आरोपी पंचदेव के खिलाफ गाय के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। इस घटना से आसपास के लोगों में खासा रोष व्याप्त है।

किशोरी लापता...

थाना प्रभारी का कहना है कि मुकदमा दर्ज कर आरोपी व किशोरी की तलाश की जा रही है।

एक माह में 268 किसानों...

इसके लिए सलाहकार कंपनी का चयन किया जा रहा है। फरवरी 2024 से अब तक 1.93 लाख वर्ग मीटर जमीन को अतिक्रमण से मुक्त किया गया। इसकी कीमत 1068 करोड़ रूपये आंकी गई है।

विभिन्न स्थानों पर...

बदमाशों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन वह बाइक पर बैठकर फरार हो गए। पीड़ित की शिकायत पर सेक्टर-63 पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी का कहना है कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

वहीं थाना सूरजपुर क्षेत्र के मोजर बेयर कंपनी के पास बाइक सवार बदमाशों ने एक व्यक्ति से मोबाइल फोन लूट लिया। सूरजपुर निवासी अखिलेश कुमार ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताएं कि वह 6 अक्टूबर को पैदल मोजर बेयर कंपनी के पास से जा रहा था। इस दौरान बाइक पर आए दो बदमाशों ने उसे मोबाइल फोन लूट लिया और फरार हो गए।

जेपी के कुशल नेतृत्व...

कि इंदिरा गांधी की सरकार को उखाड़ फेंका। देवेंद्र सिंह अवाना ने कहा कि जे पी के उस आंदोलन में जनता आगे थी और नेता पीछे। हमें भी जयप्रकाश जी के विचारों को आत्मसात करना होगा। इस मौके पर प्रवक्ता चरण सिंह राजपूत, गुलशन चावला, पप्पू, बबली, प्रवेश कुमार, प्रियांशू, मनोज, नदीम अहमद, बलेनी आदि मौजूद रहे।

फायरिंग करने के...

आ रहे दो युवकों को रूकने का इशारा किया दोनों युवकों ने भागने का प्रयास किया लेकिन पुलिस टीम ने उन्हें दबोच लिया। तलाशी में उनके पास से देसी पिस्तौल व तमंचा बरामद हुआ। पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम अमन जयसवाल व चिराग भाटी निवासी ग्राम कोटला थाना पांडव नगर पूर्वी दिल्ली बताया।

पूछताछ में चिराग भाटी ने बताया कि उसका बीते दिनों पाली गांव निवासी महावीर के बेटे के साथ झगड़ा हो गया था। झगड़े के दौरान महावीर के बेटे ने उसे चांटा मार दिया था। इस बात से आहत होकर वह 30 सितंबर को अपने साथी अमन जयसवाल के साथ पाली गांव में महावीर के घर पहुंचा। उन्होंने महावीर के घर पर तमंचे से कई राउंड फायरिंग की । फायरिंग करने के बाद वह मौके से फरार हो गए। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्होंने पिस्तौल व तमंचा एक राह चलते आदमी से खरीदी थी। थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस ने वारदात में प्रयुक्त बाइक को भी सीज कर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उन्हें न्यायालय में पेश किया है।

फैक्ट्री मालिक समेत...

फैक्ट्री मालिक दीपक के साथ 2 साल का एग्रीमेंट किया था। मुनमुन सिंह के मुताबिक 15 मार्च 2024 को दीपक अपने जीजा राहुल कुमार शर्मा व अन्य अज्ञात लोगों को लेकर फैक्ट्री पर आया। इन लोगों ने उसके स्टाफ को के साथ मारपीट कर उन्हें फैक्ट्री से बाहर निकाल दिया। यह पूरी घटना फैक्ट्री में लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई।

जानकारी मिलने पर वह फैक्ट्री पहुंची तो दीपक शर्मा व अन्य लोगों ने उसके साथ गाली गलौज की। उसने जब गाली-गलौज देने का विरोध किया तो आरोपियों ने उसके साथ में मारपीट की। इस दौरान दीपक ने उसकी शर्ट फाड़ दी और उसके सीने पर मुक्के से वार किया। पीड़िता के मुताबिक इस दौरान आरोपियों ने उसे भद्दी-भद्दी गलियां दीं। किसी तरह वह जान बचाकर भागी और उसने पुलिस को सूचना दी।

मौके पर पहुंची पीसीआर ने उसे चौकी जाने की सलाह दी। चौकी पहुंचने पर पुलिस ने इसकी शिकायत दर्ज नहीं की इसके बाद उसने राज्य महिला आयोग में इसकी शिकायत दर्ज कराई। थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़िता की शिकायत पर दीपक कुमार गौड़ व राहुल शर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और जांच पड़ताल की जा रही है।

घर से लैपटॉप व मोबाइल चोरी

नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थान पर चोरों ने चोरी की दो वारदातों को अंजाम दिया। चोर दो लैपटॉप व मोबाइल फोन चोरी कर ले गए। पीड़ितों की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

थाना सेक्टर-49 क्षेत्र के होशियारपुर में किराए पर रहने वाले एक व्यक्ति के कमरे से चोरों ने दो लैपटॉप चोरी कर लिया है। मूल रूप से दौसा राजस्थान निवासी मुकुल कुमार शर्मा ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह हाल में होशियापुर गांव में किराए पर रह रहा है। 4 अक्टूबर को वह कंपनी से वापस आने के बाद सुबह 3 बजे अपने कमरे पर सो गया था। इस दौरान उसका दरवाजा खुला हुआ था। जागने पर पता चला कि उसका लैपटॉप गायब है।

थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और चोरों की तलाश की जा रही है। वहीं थाना सेक्टर 113 क्षेत्र के सेक्टर 73 में रहने वाले नितिन कुमार ने अपना मोबाइल फोन चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है नितिन कुमार ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि 6 अक्टूबर की रात्रि को वह ड्यूटी खत्म कर अपने कमरे पर आया रात्रि 11 बजे के आसपास वह खाना खाकर सो गया। सुबह जब वह सोकर उठा तो उसके पास रखा मोबाइल फोन गायब था। उसने जब कमरे का दरवाजा खोलने का प्रयास किया तो वह बाहर से बंद था। किसी तरह उसने कमरे का दरवाजा खुलवाया और आस पड़ोस में फोन की तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला।

मानसिक रोगियों के लिए खेल प्रतियोगिता कराई

नोएडा (चेतना मंच)। जनपद न्यायाधीश अवनीश सक्सेना के दिशा निर्देशन में तथा अपर जिला जज सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ऋचा उपाध्याय की अध्यक्षता में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर शांति होम ग्रेटर नोएडा द्वारा मानसिक स्वास्थ्य केंद्र में मानसिक रोगियों के मध्य विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उक्त कार्यक्रम में निदेशक शांति होम संगीता व अन्य चिकित्सक व उक्त चिकित्सा संस्थान में इलाज करा रहे महिला एवं पुरुष मानसिक रोगी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मानसिक रोगियों के लिए खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा उपहार भेंट किए गए।

कार्यक्रम में शांति होम में इलाज करा रहे पुरुष व महिला रोगियों द्वारा आर्ट एवं क्राफ्ट के माध्यम से बनाई गई कलाकृतियां को प्रदर्शित किया गया। जिसका अवलोकन करते हुए अपर जिला जज सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ऋचा उपाध्याय ने भूरी-भूरी प्रशंसा की।

खास खबर

बीसीसीआई ने रतन टाटा के निधन पर शोक व्यक्त किया

मुंबई : भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। बीसीसीआई ने गुरुवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर रतन टाटा की फोटो साझा करते हुए लिखा कि बीसीसीआई रतन टाटा के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करता है और पूरे देश के साथ शोक व्यक्त करता है। विभिन्न क्षेत्रों में उनके अमूल्य योगदान ने भारत के विकास और सफलता की कहानी को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पोस्ट में कहा गया। जुनून, सहानुभूति, दूरदर्शी नेतृत्व, नवाचार और उत्कृष्टता के सिद्धांतों पर आधारित उनकी असाधारण विरासत आने वाले वर्षों में भावी पीढ़ियों को प्रेरित और मार्गदर्शन करती रहेगी। उल्लेखनीय है कि रतन टाटा का बुधवार रात यहां एक अस्पताल में निधन हो गया।

ग्रीस फुटबॉलर बाल्डॉक स्विमिंग पूल में मृत पाए गए

ग्लाइफाडा : इंग्लैंड में जन्मे ग्रीस के अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी जॉर्ज बाल्डॉक दक्षिणी एथेंस के ग्लिफाडा में अपने घर के स्विमिंग पूल में मृत पाए गए है। रिपोर्टों के अनुसार पुलिस ने बुधवार को घटनास्थल पर 31 वर्षीय बाल्डॉक को होश में लाने का प्रयास किया लेकिन उसे होश में नहीं लाया जा सका और चिकित्सा आपातकालीन इकाइयों ने खिलाड़ी की मौत की पुष्टि की। पुलिस ने कहा कि मौत का कारण अज्ञात है। बाल्डॉक सात साल तक ब्लेड्स में रहने के बाद गर्मियों में ग्रीस के पैनाथिनाइकोस क्लब में शामिल हुए थे।

देशवाल पीकेएल सीजन के लिए जयपुर पिंक पैंथर के कप्तान नियुक्त

जयपुर : जयपुर पिंक पैंथर ने स्टार रैडर अर्जुन देशवाल को प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 11वें सीजन के लिए कप्तान बनाने की घोषणा की है। देशवाल ने आठवें सीजन में पिंक पैंथर में शामिल हुए थे। अर्जुन जल्द ही प्रशंसकों के बीच लोकप्रिय हो गए। उन्होंने अपने प्रदर्शन ने टीम को सीजन नौ में ट्रॉफी जीतने और सीजन दस में सेमीफाइनलिस्ट बनने में मदद की। अर्जुन ने कप्तान ने टीम का कप्तान बनाये जाने पर कहा कि मैं पीकेएल में एक और सीजन का इंतजार कर रहा हूं, टीम कड़ी मेहनत कर रही है और मैं इस टीम को आगे ले जाने के लिए उत्सुक हूं और उम्मीद है कि इस बार मैं जयपुर पिंक पैंथर्स को उनके तीसरे सिल्वरवेयर तक ले जाने में मदद कर सकूंगा। पिंक पैंथर का इस सीजन में पहला मुकाबला 20 अक्टूबर को गाचीबोवली इंडोर स्टेडियम में बंगाल वॉरियर्स के खिलाफ होगा।

भारत महिला ब्लाइंड फुटबॉल विश्व चैंपियनशिप की करेगा मेजबानी

नई दिल्ली : भारतीय ब्लाइंड फुटबॉल महासंघ (आईबीएफएफ) ने गुरुवार को कहा कि केरल में कोच्चि के कक्कनाड में यूनाइटेड स्पोर्ट्स सेंटर में अगले वर्ष दो से 12 अक्टूबर 2025 में होने वाली महिला ब्लाइंड फुटबॉल विश्व चैंपिनशिप की मेजबानी भारत करेगा। यहां आयोजित संवाददाता सम्मेलन में आईबीएफएफ ने यह घोषणा की। इस अवसर पर राष्ट्रीय टीम के मार्गदर्शक नरेश सिंह नयाल ने कहा कि अगले वर्ष होने वाले इस टूर्नामेंट के साथ-साथ आईबीएसए पुरुष राष्ट्र कप और आईबीएसए पुरुष एशियाई-ओशिनिया चैंपियनशिप डिवीजन 2 की भी भारत मेजबानी करेगा। उन्होंने कहा कि विश्व चैंपियनशिप में जापान, भारत, जर्मनी, इंग्लैंड, अर्जेंटीना, स्वीडन, मोरक्को और ऑस्ट्रिया टीम हिस्सा लेंगी। भारतीय दृष्टिहीन फुटबॉल टीम के निदेशक और कोच सुनील जे. मैथ्यू ने कहा कि यदि सरकार और कॉर्पोरेट जगत समर्थन करते हैं तो भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। हमारा मुख्य लक्ष्य लॉस एंजिल्स 2028 में होने वाले पैरालिंपिक खेलों में जगह बनाना है।

भारतीय खेल जगत ने रतन टाटा को श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली : भारतीय खेल जगत ने देश के सबसे सम्मानित उद्योगपतियों में से एक रतन टाटा के निधन पर दुख व्यक्त किया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी है। ओलंपिक पदक विजेता गगन नारंग ने अपनी श्रद्धांजलि में रतन टाटा के प्रति गहरा सम्मान और आदर व्यक्त किया। उन्होंने टाटा की दयालुता, बुद्धिमत्ता और ईमानदारी पर प्रकाश डाला। नारंग ने केवल वित्तीय सफलता से परे देखने के लिए रतन टाटा की प्रशंसा की। उन्होंने परोपकार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और विभिन्न क्षेत्रों के लिए समर्थन के माध्यम से सामाजिक बेहतरी के लिए उनकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का जिक्र करते हुए कहा कि रतन टाटा ने मुनाफे से परे, लोगों और भारत के भविष्य में निवेश किया। रतन टाटा 1991 से 2012 तक टाटा संस और टाटा समूह के अध्यक्ष रहे एवं टेटली, जगुआर लैंड रोवर और कोरस जैसे महत्वपूर्ण अधिग्रहणों के माध्यम से भारतीय समूह को वैश्विक मंच पर विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पीटी उषा के खिलाफ आएगा अविश्वास प्रस्ताव

● नई दिल्ली, वार्ता

पीटी उषा के खिलाफ आ सकता है अविश्वास प्रस्ताव भारतीय ओलंपिक संघ की पहली महिला अध्यक्ष बनने के दो साल से भी कम समय के बाद, प्रसिद्ध एथलीट पीटी उषा को 25 अक्टूबर को इसकी विशेष आम बैठक के दौरान अविश्वास मत का सामना करना पड़ सकता है। उषा के लिए मुश्किलें आ सकती है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव पर कार्यकारी समिति के 12 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए है।

रिपोर्ट के मुताबिक, कार्यकारी परिषद द्वारा बैठक के एजेंडा मुद्दों के बिंदु संख्या 26 के अनुसार, आईओए, कथित संवैधानिक उल्लंघनों और भारतीय खेलों के लिए संभावित रूप से हानिकारक कार्यों के मद्देनजर प्रेसिडेंट

के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा और विचार करेगा। पीटी उषा का आईओए के कार्यकारी परिषद के सदस्यों के साथ लंबे समय से विवाद चल रहा है और दोनों तरफ से आरोप लग रहे हैं। आईओए की प्रमुख बनने वाली पहली महिला पीटी उषा ने कथित तौर पर पात्रता मानदंडों का उल्लंघन करने के लिए कई कार्यकारी परिषद सदस्यों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। दूसरी ओर, उनके विरोधियों ने पीटी उषा पर ज्यादती का आरोप लगाया है। पेरिस ओलंपिक में आतिथ्य लाउंज के लिए रिलायंस के साथ अनुबंध के संबंध में भारत के नियंत्रक एंव महालेखा परीक्षक ने भी उनसे पूछताछ की है। वहीं भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी उषा ने ट्रेजरर सहदेव यादव के उस दावे को पूरी तरह से खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने सीएजी यानी भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट में इस बात को लेकर कहा है कि रिलायंस इंडिया लिमिटेड (आरआईएल) के साथ गलत समझौते की वजह से इंडियन ओलंपिक संघ को 24 करोड़ रुपये के नुकसान का सामना करना पड़ा है। सहदेव यादव के इस दावे को लेकर अब आईओए अध्यक्ष पीटी उषा ने बातचीत में बताया कि ये सब उन्हें बदनाम करने की साजिश है ताकि उनकी प्रतिष्ठा को खराब किया जा सके। इसको लेकर पीटी उषा ने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि आखिर सहदेव यादव ऐसा क्यों कर रहे हैं। वह सीएजी की जांच के दायरे में है और जानबूझकर मुझपर आरोप लगा रहे हैं। पीटी उषा ने बातचीत में इस पूरे मुद्दे को लेकर कहा कि आईओए के अध्यक्ष के रूप में संगठन के संविधान के अनुसार ही मैंने अब तक सारे फैसले लिए हैं। मैंने इस दौरान किसी भी तरह का कोई गलत कदम नहीं उठाया है। मुझे इस बारे में बिल्कुल भी नहीं पता कि मेरे संगठन का हिस्सा ये लोग मेरे खिलाफ एजेंडा क्यों चला रहे हैं। मेरा इसमें किसी भी तरह से कोई निजी हित नहीं छुपा हुआ है। मैंने संगठन से संबंधित किसी भी तरह का फैसला लेने से पहले आईओए के सभी सदस्यों से उसमें सलाह ली है। आईओए के साथ एक अगस्त 2022 को आरआईएल के साथ हुई स्पॉन्सरशिप डील के अनुसार एशियन गेम्स (2022, 2026), कॉमनवेल्थ गेम्स (2022, 2026) 2024 पेरिस ओलंपिक और 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक में आधिकारिक रूप से आईओए के साथ प्रमुख साझेदार की बनने की मंजूरी दिए जाने के साथ उन्हें इन खेलों के दौरान इंडिया हाउस का निर्माण करने की भी जिम्मेदारी मिली थी।

नवंबर में टेनिस को अलविदा कहेंगे नडाल

22 बार के ग्रैंड स्लेम चैंपियन हैं स्पेनिश खिलाड़ी, कहा- अगले महीने डेविस कप में आखिरी बार खेलेंगे

नडाल सबसे ज्यादा 14 बार फ्रेंच ओपन का टाइटल जीतने वाले पुरुष खिलाड़ी

फ्रेंच ओपन में 18 बार हिस्सा लेते हुए 112 मैच जीते, सिर्फ 4 हारे

नई दिल्ली, वार्ता : दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ने टेनिस से रियाटरमेंट का ऐलान कर दिया है। नवंबर में होने वाला डेविस कप फाइनल नडाल के करियर का आखिरी इवेंट होगा। उन्होंने गुरुवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फैंस को यह जानकारी दी।

38 साल के स्पेनिश स्टार पिछले कुछ वर्षों से चोट की समस्या से जूझ रहे थे। 22 ग्रैंड स्लैम विजेता नडाल की गिनती दुनिया के अब तक महानतम टेनिस खिलाड़ियों में होती है। मेंस खिलाड़ियों में उनसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम सिंगल्स खिताब खिलाड़ी सिर्फ नोवाक जोकोविच जीत सके हैं। जोकोविच के नाम 24 टाइटल हैं। नडाल सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने वाले दूसरे खिलाड़ी नडाल मेंस सिगल्स में सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं। नडाल ने 22 खिताब जीते हैं। सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने के मामले में सर्बिया के नोवाक जोकोविच हैं, जिन्होंने अब तक 24 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते हैं। 4 साल पहले ही स्विट्जरलैंड के महान टेनिस प्लेयर रोजर फेडरर ने संन्यास लिया था। अब नडाल ने भी खेल को अलविदा कह दिया है। फेडरर ने 20 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते थे। 'लाल बजरी का बादशाह' के नाम से मशहूर नडाल सबसे ज्यादा 14 बार फ्रेंच ओपन का टाइटल जीतने वाले पुरुष खिलाड़ी हैं। इसलिए नडाल को लाल बजरी का बादशाह कहा जाता है। फ्रेंच ओपन क्ले कोर्ट यानी लाल बजरी से बने कोर्ट पर खेला जाता है। फ्रेंच ओपन में 18 बार हिस्सा लेते हुए 112 मैच जीते, सिर्फ 4 हारे लाल बजरी के बादशाह कहे जाने वाले नडाल ने साल 2022 में 14वीं बार फ्रेंच ओपन का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया था। जब नडाल ने 2022 में 36 साल की उम्र में ट्रॉफी जीती तो वह टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे उम्रदराज चैंपियन बने थे। नडाल ने फ्रेंच ओपन में 19 बार हिस्सा लेते हुए 112 मैच जीते हैं और उन्हें सिर्फ 4 बार हार का सामना करना पड़ा है जो किसी भी एक ग्रैंडस्लैम में महिला और पुरुष वर्ग में वर्ल्ड रिकॉर्ड है। नडाल ने गोल्डन स्लैम भी जीता है। वे गोल्डन स्लैम जीतने वाले दुनिया के 3 पुरुष खिलाड़ियों में शामिल हैं। नडाल ने गोल्डन स्लैम 2008 में बीजिंग ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतकर पूरा किया था। गोल्डन स्लैम का मतलब होता है कि चारों ग्रैंड स्लैम और ओलंपिक गोल्ड जीतने वाला खिलाड़ी। यानी वो खिलाड़ी जो ऑस्ट्रेलियन ओपन, फ्रेंच ओपन, विम्बलडन, यूएस ओपन के साथ ओलंपिक चैंपियन भी बना है।

सहारनपुर के विजय-आकिब रणजी टीम में

● जनवाणी संवाददाता, सहारनपुर

जिले के दो क्रिकेट खिलाड़ियों का चयन यूपी की रणजी ट्रॉफी टीम के लिए हुआ है। बंदाहेड़ी गांव के विजय कुमार और संसारपुर के आकिब खान को उत्तर प्रदेश की टीम में शामिल किए जाने पर सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के पदाधिकारीयों,खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों ने खुशी का इजहार करते हुए दोनो प्लेयर को बधाई व शुभकामनाएं दी हैं।

गुरुवार को एसडीसीए के अध्यक्ष राजीव गुप्ता ने बताया कि हमारे चेयरमैन मोहम्मद अकरम के प्रयास से जनपद के क्रिकेट खिलाड़ी लगातार सफलता और उपलब्धियां हासिल कर सहारनपुर का नाम रोशन कर रहे हैं। इसी क्रम में संसारपुर गांव के आकिब खान और बंदाहेड़ी गांव के विजय कुमार को उत्तर प्रदेश की रणजी ट्रॉफी टीम में शामिल किया गया है। विजय कुमार के पिता पुलिस में है और आकिब के पिता की गांव में परचून की दुकान है। राजीव गुप्ता ने बताया कि हाल में हुई यूपी टी20 लीग में सहारनपुर के विजय कुमार ने 145 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से गेंदबाजी की थी।

उन्होंने बताया कि ग्यारह अक्टूबर से लखनऊ के ईकाना स्टेडियम में यूपी की रणजी ट्रॉफी टीम चार दिवसीय क्रिकेट मैच खेलेगी। इस उपलब्धि पर एसडीसीए के सचिव लतीफ उर रहमान, उपाध्यक्ष परविंदर सिंह, कोषाध्यक्ष गोपाल कृष्ण कालरा,संरक्षक अमर गुप्ता, राज कुमार राजू, एपेक्स सदस्य साजिद उमर, सत्यम शर्मा, मीडिया प्रभारी सैयद मशकूर, संयुक्त सचिव महेश शर्मा, भूपेंद्र कच्छल, जीआईएस सचिव रवि सिंघल, योगेश गुप्ता, राकेश शर्मा, रणधीर कपूर, राजीव गोयल टप्पू,विक्रांत चौधरी, आमिर कुरैशी, विनय कुमार, अर्जुन चौहान, भावना तोमर, तनवीर, संजय विश्वकर्मा, शोएब, सचिन सैनी, पीयूष,राणा, रविश राठी, अर्जुन कुमार, राज शेखर, राव मुजीब, अक्षय चौहान, आयुष, मिरदुल गर्ग, ललित व प्रिंस आदि ने शुभकामनाएं दी है।

महिला टी-20 विश्व कप: वेस्टइंडीज ने बांग्लादेश को आठ विकेट से हराया

● शारजाह, वार्ता

करिश्मा रामहैरक की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद कप्तान हेली मैथ्यूज (34) रनों की पारी की बदौलत वेस्टइंडीज ने गुरुवार यहां खेले गए महिला टी-20 विश्वकप के 13वें मुकाबले में बंगलादेश को आठ विकेट से हरा दिया हैं।

आसान लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज टीम की सलामी बल्लेबाज कप्तान हैली मैथ्यूज और स्टेफनी टेलर की जोड़ी ने पहले आठ ओवर में 52 रन जोड़कर अपने इरादे जता दिए। मारुफ अख्तर ने मैथ्यूज (34) को बोल्ड आउट कर वेस्टइंडीज को पहला झटका दिया लेकिन तब तक इंडीज ने जीत की तरफ अपने कदम बढ़ा दिए थे। स्टेफनी टेलर (27) रन पर रिटायर्ड हर्ट हुई। कैंपबेल ने 16 गेंदों का सामना करते हुए दो चौकों की मदद से 21 रन बनाए। इसके बाद डिएंड्रा डॉटिन ने सात गेंदों का सामना कर एक चौका एवं दो छक्के के मदद से नाबाद 19 रन बनाकर वेस्टइंडीज की जीत तय कर दी। शिनेल हेनरी दो रन पर नाबाद रहीं। वेस्टइंडीज ने 12.5 ओवर में दो विकेट पर 104 रन बनाकर आठ विकेट से मुकाबला जीत लिया। बांग्लादेश की ओर से नाहिया अख्तर और मारुफा अख्तर ने एक-एक विकेट लिया। इससे पहले करिश्मा रामहैरक की करिश्माई गेंदबाजी (17 रन पर चार विकेट) की बदौलत वेस्टइंडीज ने बांग्लादेश को 103 रन पर रोक दिया था। वेस्टइंडीज की कप्तान हेली मैथ्यूज ने आज यहां टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। अपने कप्तान के निर्णय को सही ठहराते हुए करिश्मा रामहैरक ने चार ओवर में 17 रन देकर बांग्लादेश के चार विकेट झटक लिए। बल्लेबाजी करने उतरी बंगलादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और 18 रन जुड़ते ही रामहैरक ने रानी (09) को स्टम्प आउट करा दिया।

मुल्तान टेस्ट में इंग्लैंड जीत के करीब

पाकिस्तान ने दूसरी पारी में 6 विकेट खोए, हैरी ब्रूक ने सहवाग का रिकॉर्ड तोड़ा

● मुल्तान, वार्ता

पाकिस्तान के खिलाफ इंग्लैंड की टीम मुल्तान टेस्ट में जीत के करीब पहुंच गई है। गुरुवार को मुकाबले के चौथे दिन इंग्लैंड ने पहली पारी 823/7 के स्कोर पर डिक्लेयर की। टीम को 267 रन की बढ़त मिली। जवाब में दिन का खेल खत्म होने तक पाकिस्तान ने दूसरी पारी में 152 रन पर 6 विकेट खो दिए हैं।

इंग्लिश टीम ने चौथे दिन की शुरूआत 492/3 के स्कोर से की थी। इससे पहले, पाकिस्तान की टीम पहली पारी में 556 रन पर ऑलआउट हो गई थी। पाकिस्तान की ओर से दूसरी पारी में आगा सलमान 41 और आमिर जमाल 27 रन बनाकर नाबाद लौटे। साउद शकील 29, सईम अयूब 25, शान मसूद 11 और मोहम्मद रिजवान 10 रन बनाकर आउट हुए। इंग्लैंड के लिए दूसरी पारी में अब तक गस एटकिंसन और ब्रायडन कार्स 2-2 विकेट लिए हैं। जैक लीच और क्रिस वोक्स को 1-1 विकेट मिला। इंग्लैंड के लिए पहली पारी में क्रिस वोक्स

17 और ब्रायडन कार्स 2 रन पर नाबाद लौटे। हैरी ब्रूक ने 317 रन की पारी खेली। उन्होंने मुल्तान में वीरेंद्र सहवाग के 20 साल पुराने रिकॉर्ड को तोड़ा। सहवाग ने 2004 में पाकिस्तान के खिलाफ 309 रन की पारी खेली थी। तब सहवाग को 'मुल्तान का सुल्तान' टैग दिया गया था। ब्रूक के अलावा, जो रूट 262 रन बनाकर आउट हुए। बेन डकेट ने 84 और जैक क्रॉले ने 78 रन बनाए। जो रूट 262 रन बनाकर आउट, 454 रन की साझेदारी टूटी जो रूट और हैरी ब्रूक के बीच 454 रन की साझेदारी हुई। आगा सलमान ने रूट को छह करते हुए यह साझेदारी ब्रेक की। रूट 4 रन पर ओली पॉप के आउट होने के बाद खेलने उतरे थे।

तीसरे दिन इंग्लैंड का स्कोर 500 के करीब एक दिन पहले बुधवार को इंग्लैंड की टीम 500 के करीब पहुंच गई थी। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक टीम ने तीन विकेट पर 492 रन बना लिए थे। जो रूट और हैरी ब्रूक नाबाद रहे। रूट 176 रन बनाकर दोहरे शतक के करीब हैं। जबकि हैरी ब्रूक ने 141 रन बना लिया है। दोनों के बीच नाबाद 243 रन पार्टनरशिप हो चुकी है। बेन डकेट (84 रन) को आमिर जमाल ने छह आउट किया। रूट टेस्ट में इंग्लैंड के टॉप स्कोरर बन गए हैं। रूट ने अपने ही देश के पूर्व ओपनर एलिस्टर कुक (12472 रन) को पीछे छोड़ा। वे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बैटर्स की लिस्ट में 5वें नंबर पर हैं।

आचार्य तीरंदाजी खेल अकादमी का उद्घाटन

ग्रेटर नोएडा: गुरुवार को ग्रेटर नोएडा के किरणय भारत एकेडमी में आचार्य वेद कुमार के द्वारा एलिट लेवल की तीरंदाजी अकादमी का शुभारंभ हुआ। उत्तर प्रदेश तीरंदाजी संघ के महासचिव अजय गुप्ता के करकमलों द्वारा वेद मंत्र उच्चारण के साथ उद्घाटन किया गया। उन्होने कहा कि मुझे पूरी उम्मीद है यह अकादमी उत्तर प्रदेश ही नहीं पूरे भारत के खिलाड़ियों के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा। इस दौरान श्री अनुज शर्मा जी सचिव मेरठ तीरंदाजी, श्री पुष्कर प्रताप सिंह अध्यक्ष जीबी नगर, सत्यदेव प्रसाद ओलंपियन, ध्यानचंद अवार्डी, योगेन्द्र सिंह राणा संयुक्त सचिव उप्र तीरंदाजी संघ, अंकित संचालक किरने भारत बैडमिंटन अकादमी आदि उपस्थित रहे। मैं आप सभी का हृदय से आभार एवं धन्यवाद प्रकट करता हूं।

ऑस्ट्रेलिया में 1 टेस्ट मिस कर सकते हैं रोहित

मुंबई, वार्ता : भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित शर्मा ऑस्ट्रेलिया में 1 टेस्ट से बाहर हो सकते हैं। उन्होंने बीसीसीआई को इन्फॉर्म किया है कि निजी कारणों के चलते उनका शुरूआती 2 में से किसी एक टेस्ट में खेलना मुश्किल है। अगर सीरीज शुरू होने से पहले निजी मामला सुलझ गया तो वह सभी मुकाबले खेलेंगे। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच 5 टेस्ट की बॉर्डर गावस्कर सीरीज 22 नवंबर से शुरू होनी है। पहला मुकाबला पर्थ में खेला जाना है। भारत ने विराट और रहाणे की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया में पिछली 2 टेस्ट सीरीज जीती थीं।

क्यों रहती हैं लड़कियां ठिगनी

लड़कियां चाहे नाटे कद ही हों या लंबी सभी अच्छी लगती हैं। लेकिन ठिगना कद क्यों होता है ये अभी तक कम लोगों को ही पता होगा।

लड़कों की तुलना में लड़कियों के लिए उम्र के साथ बढ़ना ज्यादा मुश्किल भरा काम होता है और इस प्रक्रिया में उनके बीमार पड़ने की आशंका ज्यादा होती है।

- लंदन में द आब्जर्वर के मुताबिक, शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन को अंजाम दिया और पाया कि कम उम्र की लड़कियां वजन घटाने के लिए अक्सर खाना नहीं खातीं और अक्सर लड़कों की बजाए ज्यादा स्मोक और ड्रिंक करती हैं।
- अध्ययन में बताया गया है कि ब्रिटेन में ज्यादातर लड़कियां कम उम्र के गुस्से का शिकार हैं और नौ लाख के करीब लड़कियों ने कहा कि वे दुखी और हताश हैं।
- शोधकर्ताओं के मुताबिक, ये समस्याएं आर्थिक तौर पर कमजोर लड़कियों में ज्यादा पाई गई। वे सेलिब्रिटी कल्चर से ज्यादा प्रभावित हैं और अपने लुक को लेकर परेशान रहती हैं।
- थिंकटैंक डेमोस के किए अध्ययन के अनुसार, लड़कियां जल्द कौमार्य खत्म होने का भी दबाव महसूस करती हैं।

ऑनलाइन शॉपिंग में अपनाएं वर्चुअल कार्ड

वैसे तो वर्चुअल क्रेडिट कार्ड का प्रयोग पिछले सात-आठ वर्षों से जारी है, मगर इसके प्रयोग में झंझट अधिक होने के कारण यह प्रयोक्ताओं में कभी भी लोकप्रिय नहीं रहा। साथ ही इक्का-दुक्का बैंकों ने ही इसे लागू किया, मगर जब क्रेडिट कार्डों के ऑनलाइन हैकिंग और फ्रॉड बढ़ने लगे, तो अतिरिक्त सुरक्षा विकल्प के रूप में वर्चुअल क्रेडिट कार्डों का प्रचलन अब बढ़ने लगा है।

कैसे बनता है वर्चुअल कार्ड

जैसा कि नाम से जाहिर है, इस कार्ड का भौतिक अस्तित्व नहीं होता। इसके लिए आपको अपने वास्तविक क्रेडिट कार्ड या बैंक खाते को जोड़कर एक कंप्यूटर अनुप्रयोग के जरिए अथवा अपने खाते में ऑनलाइन लॉगिन कर वर्चुअल क्रेडिट कार्ड बनाना होता है। इस तरह से वर्चुअल क्रेडिट कार्ड का एक नंबर व पासवर्ड जेनरेट होता है, जिसे आप इंटरनेट पर किसी भी किस्म की ऑनलाइन शॉपिंग या बिल भुगतान के लिए कर सकते हैं। वर्चुअल क्रेडिट कार्ड की अन्य खूबियां भी होती हैं, जैसे कि इन्हें एक बार, सीमित अधिकतम धन भुगतान अथवा सीमित अवधि के लिए जेनरेट किया जा सकता है, ताकि कुछ समय बाद या एक बार प्रयोग के बाद ये स्वत: ही काम के न रहें। इस तरह से प्रयोक्ता को अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया होती है।

ऑनलाइन शॉपिंग की लोकप्रियता

अपना घर छोड़े बिना सब कुछ खरीदने के लिए ऑनलाइन शॉपिंग बहुत ही लोकप्रिय हो गया है, और यह वस्तुएं जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, फर्नीचर, सौंदर्य प्रसाधन, और कई और सामान खरीदने के लिए एक सुविधाजनक साधन है। हम यातायात और भीड़ से बच सकते हैं। वस्तुएं खरीदने के लिए कोई विशेष समय नहीं है, दुकान के खुलने की प्रतीक्षा करने की बजाय हम किसी भी समय खरीद सकते हैं। इन सभी लाभों के अलावा जोखिम भी सम्मिलित हैं और अद्वितीय इंटरनेट जोखिम भी हैं। इसलिए ऑनलाइन खरीदारी के लिए जाने से पहले कुछ सुरक्षा उपाय करने बहुत महत्वपूर्ण हैं।

सुरक्षित शॉपिंग के लिए सलाह

- इससे पहले कि आप ऑनलाइन खरीदारी प्रारंभ करें सुनिश्चित करें कि आपका पीसी सभी भीतरी सुरक्षाएं जैसे एक एंटीवायरस, एंटीस्पायवेयर, फ़ायरवॉल, प्रणाली-सभी सुरक्षा पैंचिज के साथ नवीनीकृत है और वेब ब्राउजर सुरक्षा के साथ सभी विश्वसनीय उच्च साइटों से सुरक्षित है और सुरक्षा स्तर उच्च पर है यह सुनिश्चित करें।
- इससे पहले कि आप चीजें ऑनलाइन खरीदें, जिस वेब साइट से आप खरीदना चाहते हैं, उसके लिए शोध करें, क्योंकि आक्रमक वेबसाइटें जो वैध दिखती हैं, परंतु होती नहीं हैं, उनके द्वारा जाल में फंसाने का प्रयत्न करते हैं। अत: विक्रेता के भौतिक पते दूरभाष नंबर को ध्यान में रखें और पुष्टि करें कि वेबसाइट एक विश्वसनीय साइट है। वेबसाइटों के लिए खोज करें और कीमतों की तुलना करें। उस विशेष वेब साइट के उपभोक्ताओं और मीडिया या व्यापारियों की समीक्षा की जांच करें।

- आप ऑनलाइन खरीदने के लिए तैयार हैं जांच लें, क्या वह साइट सुरक्षित है जैसे एचटीटीपीएस या ब्राउज़र ऐड्रेस बार या स्टेटस बार पर पैडलॉक है और फिर वित्तीय लेनदेन के लिए आगे बढ़ें।
- लेन-देन पूरा होने के पश्चात लेनदेन रिकॉर्ड और उत्पाद के विवरण जैसे मूल्य, पुष्टि पावती (रसीद), बिक्री की शर्तों और नियमों का एक प्रिंट या स्क्रीन शॉट लें।
- तत्काल जैसे ही आप काम समाप्त करते हैं, क्रेडिट कार्ड के बयानों की जांच करें और उन्हें आपके शुल्क भुगतान के विषय में पूछें कि वह समान हैं या नहीं, और यदि आप कोई परिवर्तन पाते हैं, तत्काल ही संबंधित अधिकारियों को रिपोर्ट करें।
- अपनी ऑनलाइन शॉपिंग समाप्त होने पर वेब ब्राउजर की सभी कुकीज को साफ कर दें और अपने पीसी को बंद कर दें, क्योंकि स्पॅमर्ज और फिशर्ज उस सिस्टम की खोज में होंगे, जो इंटरनेट से जुड़ा हो और स्पैम ई-मेल भेजने की कोशिश करेंगे और दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर जो आपकी व्यक्तिगत जानकारी एकत्र कर सकता है, उसे स्थापित करने की कोशिश करेंगे।
- याद रखें वैध व्यापार के लोग इस तरह के ई-मेल कभी नहीं भेजते। यदि आप ऐसी ई-मेल प्राप्त करते हैं तुरंत व्यापारी को दूरभाष करें और इस विषय में सूचित करें।

अब आपकी ऑनलाइन शॉपिंग संबंधी क्रेडिट कार्ड से होने वाले खतरों को दूर करने का पक्का समाधान आ गया है। वर्चुअल क्रेडिट कार्डों के जरिए।

डेवलप होने दें इम्यूनिटी पावर

शरीर स्वस्थ तो सब सही। इसमें कोई शक नहीं कि स्वास्थ्य की देखभाल जरूरी है। खाने-पीने से लेकर रहने-सहने का तरीका सबकुछ बदल चुका है। खासकर, बच्चों के मामले में यह और भी जरूरी हो जाता है। मासूमों को प्रदूषण से बचाने के लिए मां-बाप तरह-तरह के उपाय करते हैं, लेकिन कभी सोचा है अत्यधिक हाइजीनिक लाइफस्टाइल भी आपके बच्चे के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती है।

आजकल लोग हेल्थ को लेकर काफी अवेयर हो गए हैं। खासकर बच्चों के मामले में वे खास सावधानी रखते हैं और कोशिश करते हैं कि उन्हें हाइजीनिक फूड ही दिया जाए। लेकिन अगर पिछले दिनों आई एक स्टडी के रिसर्चर्स की मानें, तो ओवर हाइजीनिक लाइफस्टाइल से भी आपके बच्चों को नुकसान पहुंच सकता है। भारतीय रिसर्चर ने अपनी स्टडी में बताया है कि पिछली जेनरेशन के माता-पिता हाइजीनिक लाइफस्टाइल पर इतना ज्यादा ध्यान नहीं देते थे, जिस वजह से उनके बच्चों को डस्ट और पलूशन फेस करने की आदत थी। लेकिन आजकल के माता-पिता अपने बच्चों को बचपन से ही ओवर हाइजीनिक लाइफस्टाइल में पालते हैं। यही वजह है कि जैसे ही बच्चा धूल-मिट्टी के संपर्क में आता है, तो वह बीमार हो जाता है। यही नहीं, उसे दूध और ब्रेड जैसी डेली यूज की चीजों से भी इंफेक्शन होने लगता है। रिसर्चर ग्रेट ऑर्मड स्ट्रीट हॉस्पिटल लंदन के डॉक्टर निखिल थापर के मुताबिक इंफेक्शन का शिकार हुए बच्चों में ज्यादातर को गाय के दूध, ब्रेड, गेहूं, सोया, अंडे और फलों से इंफेक्शन हुआ था। वाकई यह बेहद चिंता की बात है कि आजकल के बच्चों में फूड एलर्जी बेहद कॉमन हो गई है। इसकी वजह माता-पिता का उन्हें ओवर हाइजीनिक लाइफस्टाइल में रखना ही है। इसलिए बेहतर होगा कि आप अपने बच्चे के भीतर इम्यूनिटी पावर डेवलप होने दें।

सोचते हैं ज्यादा

भागदौड़ वाली जिंदगी में लोगों को कम ही समय मिलता है कि वे अपने स्वास्थ्य के लिए कुछ सोच सकें, लेकिन जितना भी वक्त मिलता है, उसमें वे ज्यादा से ज्यादा स्वास्थ्य के बारे में सोचते हैं।

ये आदतें कहीं फीलबैड न करा दें

आमतौर पर महिलाएं पुरुषों से हमेशा शिकायत करती हैं। लेकिन महिलाओं की कुछ आदतें भी ऐसी होती हैं, जो उन्हें फीलबैड करवा सकती हैं। हालांकि महिलाएं अक्सर इन छोटी-छोटी बातों पर गौर नहीं करतीं, लेकिन सामने वाले को गुस्सा जरूर आ जाता है।

खाने पर हाथ मारना

रेस्टॉरेंट में पहले अपनी ओर से खुद ऑर्डर न करना और फिर बाद में अपने पार्टनर के खाने पर हाथ मारना एक ऐसी बुरी आदत है, जिससे लड़के चिढ़ते हैं। महिलाएं यह कह कर ऑर्डर देने से मना कर देती हैं कि उनका पेट भरा है।

टूटते-झड़ते बाल

मर्दों को स्त्रियों के टूटते-झड़ते बालों से तब चिढ़ होती है, जब बालों के गुच्छे बाथरूम की नाली के होल पर उन्हें ऐसे पड़े हुए मिलते हैं कि पानी ब्लॉक हो जाता है।

राय देने में आनाकानी

अपनी राय न देना, खासतौर से तब जब मांगी जा रही हो। डिनर के लिए जाते में यह पूछने पर कि कौन से होटल में चलें, वह कहती हैं कि जहां तुम चाहो लेकिन फिर जब आप अपनी मर्जी से इटैलियन रेस्टॉरेंट जाने का निर्णय ले लें तो वह कहेंगी कि तुम्हें यह अच्छी तरह से पता था कि मुझे यह पसंद नहीं...और तब एक बहस की शुरुआत।

जबरदस्ती का बखान

बार-बार अपने पार्टनर से यह कहना कि महिलाओं को हंसने और हंसाने वाले पुरुष अट्रैक्टिव लगते हैं। जबकि सच बात तो यह है कि महिलाओं को लंबे, हैंडसम और अमीर पुरुष अच्छे लगते हैं।

भागदौड़ करवाना

जब आप बाहर जाते हैं और किसी होटल में ठहरते हैं तो उन्हें वह रूम कभी पसंद नहीं आता, जिसमें आप लोग रुक रहे होते हैं। इसके लिए वह खूब भागदौड़ करवाती हैं और देखना चाहती हैं कि होटल के कई दूसरे रूम कैसे हैं।

अतिभावुकता

यह सोचना कि जानवरों की भी कई तरह की भावनाएं होती हैं। वे अक्सर किसी चुप बैठे कुत्ते को देख कर कहेंगी कि यह कितना उदास बैठा है। जबकि असल बात तो यह है कि जानवरों में ऐसा कुछ नहीं होता, जिसकी वजह से वह दु:खी, अनवॉन्टेड फील करें।

स्पोर्ट्स में रुचि

स्पोर्ट्स में महिलाओं के होने और पुरुषों के ही बराबर प्राइज लेने की महत्ता को वे अक्सर बताती हैं, मगर जब गेम देखने की बारी आती है तो वे केवल पुरुषों के मैच देखती हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि मेल प्लेयर्स सेक्सी होते हैं और महिलाओं की गेम देखने से वे बोर हो जाती हैं।

खुद का कारोबार करने की ख्वाहिश रखते हैं भारतीय युवा

ऑफिस में आठ से दस घंटे काम करने के बाद भी मनचाही तन्ख्वाह न मिलने और दिन-प्रतिदिन जिंदगी की जरूरतों के बढ़ते रहने के बीच एक ही विकल्प बचता है और वह है खुद का कारोबार कर अच्छा मुनाफा कमाना. भारत में भी खुद का कारोबार करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है.

भले ही विश्व में नौकरी की संभावाएं कम होती नजर आ रही हैं, लेकिन कैरियर को सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचाने के लिए भारतीय युवाओं में खुद का कारोबार करने का जज्बा तेजी से बढ़ रहा है. इतना ही नहीं अन्य देशों के युवाओं की अपेक्षा भारतीय युवा जल्द ही अपने व्यवसाय को व्यवस्थित करने की ख्वाहिश रखते हैं.

हाल में चार्टर्ड इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट एकाउंट्स द्वारा वैश्विक स्तर पर किये गये एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी है कि भारतीय युवा 33 वर्ष की आयु में अपना खुद का कारोबार करना चाहते हैं, जबकि अन्य देशों के युवा 36 वर्ष की आयु में ऐसा करने की ख्वाहिश रखते हैं. सर्वे में यह तथ्य भी सामने आया है कि 34 प्रतिशत युवा 30 वर्ष कि आयु तक सीनियर मैनेजर के पद पर कार्य करना चाहते हैं, वहीं 17 प्रतिशत युवा अपने ही बॉस जैसा यानी निदेशक बनना चाहते हैं. 67 प्रतिशत युवा ऐसे संस्थान में काम करना पसंद करते हैं, जो उन्हें अच्छी तनख्वाह दे. वहीं 36 प्रतिशत युवा ऐसा करोबार करने को प्राथमिकता देते हैं, जो अपने देश के साथ उन्हें विदेश में भी तरक्की पाने का अवसर प्रदान करे.

मल्टीनेशनल कंपनी में काम करनेवाले 31 वर्षीय साहिल शर्मा कहते हैं कि आज के दौर में रिस्क तो हर जगह है, लेकिन सोची-समझी प्लानिंग के साथ अपने कारोबार में लिया गया रिस्क अकसर लोगों को कम समय में अधिक मुनाफा दिला देता है. वहीं नौकरी करनेवालों की बात करें, तो वे पूरी लगन के साथ काम करते हैं, लेकिन उनकी मेहनत का प्रॉफिट उन्हें मिलने की बजाय कंपनी को मिलता है. जाहिर है कि खुद का कारोबार करना किसी कपंनी में नौ से पांच की नौकरी करने से कहीं ज्यादा बेहतर है. दो वर्षो से गारमेंट्स का बिजनेस चलानेवाली 29 वर्षीय गरिमा माथुर भी खुद के कारोबार को नौकरी से ज्यादा बेहतर बताती हैं. गरिमा कहती हैं कि तीन साल नौकरी करने के बाद ही मैंने अपना खुद का व्यवसाय करने का फैसला किया. मेरे लिए यह मुनाफा कमाने के साथ-साथ अपनी पहचान बनाने का भी बेहतरीन जरिया बन गया. अब यह सोच कर अच्छा लगता है कि सही समय पर मैंने सही फैसला लिया और सही समय पर अपने कारोबार को स्थापित कर लिया. यदि आज भी मैं नौकरी करती रहती, तो शायद मुझे तनख्वाह के रूप में 20 से 25 हजार या ज्यादा-से-ज्यादा 35 से 40 हजार रुपये ही हर महीने मिल रहे होते. लेकिन अपना कारोबार करने का मैंने फैसला करके आज मैं हर महीने लाखों का मुनाफा कमा रही हूं.

फाइनांशियल मार्कीट्स में असीमित अवसर

अनेक उतार-चढ़ाव तथा रिटेल निवेशकों के निम्न आधार के बावजूद बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज एशिया का छठा तथा विश्व का 14वां सबसे विशाल मुद्रा बाजार है। देश में कुछ अन्य स्टॉक एक्सचेंज के अलावा दुनिया भर में अनेक स्टॉक एक्सचेंज मौजूद हैं जहां हर दिन अरबों-खरबों का लेन-देन होता है। इस क्षेत्र में कार्य करने वालों के पास उज्वल करियर बनाने के असीमित अवसर होते हैं। वित्तीय सेवा पेशेवरों की मांग अब केवल स्टॉक ब्रोकरेज फर्म्स तक ही सीमित नहीं है बल्कि बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों में भी उनकी काफी जरूरत होती है।

फाइनांशियल मार्कीट्स से संबंधित कोर्सों के तहत छात्रों को बाजार को बेहतर ढंग से समझने तथा मिलने वाले मौकों का अधिक से अधिक लाभ उठाने का कौशल प्रदान किया जाता है। अनेक संस्थान इस विषय से संबंधित नवीन कोर्स शुरू कर रहे हैं जिनसे छात्रों को इस क्षेत्र के बारे में नवीनतम बदलावों से जागरूक करवाया जाता है।

सम्भावनाएं

जो छात्र फाइनांशियल मार्कीट्स संबंधी कोर्स सफलतापूर्वक करते हैं वे बैंकों में इन्वैस्टमैंट बैंकर्स या रिलेशनशिप मैनेजर, इंश्योरैंस कम्पनियों में वैल्थ मैनेजर के अलावा एनालिस्ट, पोर्टफोलियो मैनेजर, सर्विलांस / कम्प्लायंस / रैगुलेशन मैनेजर, डिजीटल कंटैंट डिवैल्पर्स एवं रिस्क मैनेजर के तौर पर भी कार्य कर सकते हैं।

शुरूआत

इस क्षेत्र में आमतौर पर युवाओं को बतौर एनालिस्ट नियुक्त किया जाता है। कार्पोरेट फाइनांस में वे मुख्यत- आंकड़ों का आकलन लगाने का काम करते हैं। वे फर्म्स की फाइनांशियल रिर्पोटस का अध्ययन करते हैं। शोध में कार्य करने वाले एनालिस्ट कम्पनियों तथा सैक्टर्स की हल-चल पर नजर रखते हैं। एनालिस्ट्स को ट्रेडिंग करने की स्वीकृति नहीं मिलती जब तक वे अपनी योग्यता एवं कौशल को पूरी तरह सिद्ध नहीं कर देते हैं क्योंकि इस काम में गलती की जरा भी गुंजाइश नहीं होती है। यहां गलती भारी नुक्सान का कारण बनती है। अनुभव हासिल करने के बाद एनालिस्ट्स को एसोसिएट के पद पर नियुक्ति मिलती है। वैसे एम.बी.ए. डिग्री धारी सीधे इस पद पर भी नियुक्ति प्राप्त करते हैं। वे अपनी टीम में काम का बंटवारा तथा निरीक्षण का काम करते हैं। इसके बाद वे वाइस प्रैजीडैंट के पद पर पदोन्नत होते हैं जो एनालिस्ट तथा एसोसिएट्स के काम पर नजर रखते हैं। वे कस्टमर्स के अधिक करीब रहते हैं। प्रतिभाशाली वाइस प्रैजीडैंट्स को एग्जीक्यूटिव डायरैक्टर, फिर मैनेजिंग डायरैक्टर के पदों पर नियुक्ति मिलती है। इस क्षेत्र में करियर की शुरूआत करने तथा अनुभव हासिल करने के लिए बेहतर होगा कि युवा किसी कम्पनी में बतौर इंटर्न काम शुरू करें।

नौकरी की तलाश में दूसरों को नुक्सान न पहुंचाएं

पेश हैं कुछ नियम जिनका पालन नौकरी के लिए आवेदन करने वाले हर व्यक्ति को करना चाहिए। अक्सर नौकरी तलाश करने वाले आवेदकों की शिकायत होती है कि इंटरव्यू के बाद उन्हें नियोक्ताओं की तरफ से कोई खबर नहीं मिलती है परंतु कुछ शिकायतें नियोक्ताओं की आवेदकों से भी होती हैं।

उनकी अक्सर शिकायत होती है कि आवेदन करने वाले कई सारे लोग साक्षात्कार के लिए पहुंचते ही नहीं जिसकी वे पहले कोई खबर भी नहीं देते हैं। ऐसे भी कई आवेदक हैं जिन्हें नौकरी दिए जाने के बाद वे ज्वाइनिंग ही नहीं करते और न ही इस बारे में कोई सूचना देते हैं। बेशक कुछ आवेदनकर्ताओं को किसी नौकरी में रुचि न रही हो या फिर उन्हें वह नौकरी अपने मतलब की न लगी हो या फिर तनख्वाह से वे संतुष्ट न हों परंतु इंटरव्यू पर न पहुंचने या नौकरी ज्वाइन नहीं करने की सूचना कम्पनी को जरूर देनी चाहिए।

उनके द्वारा बगैर बताए गायब हो जाने की बात से उन लोगों के लिए चीजें मुश्किल हो जाती हैं जो भविष्य में नौकरी के लिए आवेदन करते हैं इसलिए आवेदनकर्ता निम्न बातों का खास तौर पर ध्यान रखें।

- यदि आपको इंटरव्यू के लिए समय दिया गया है तो समय पर पहुंचें। यदि किसी वजह से आप इंटरव्यू पर नहीं पहुंच सकते हैं तो समय पूर्व फोन करके इसकी सूचना कम्पनी को दें।
- यदि आपको नौकरी पर रख लिया गया है तो काम पर समय पर पहुंचें या फिर समय रहते पर्याप्त कारण बताते हुए नौकरी न करने की सूचना कम्पनी को देना आवश्यक है।

बनाएं शोध के क्षेत्र में कैरियर

विज्ञान संकाय से पढ़ाई करनेवाले छात्रों के सामने एक तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है- बायोइन्फॉरमेटिक्स. विद्यार्थी की विज्ञान की पढ़ाई के साथ ही अगर शोध में रुचि हो, तो यह क्षेत्र उनके लिए काफी बेहतर साबित हो सकता है. कैरियर के तौर पर बायोइन्फॉरमेटिक्स के विभिन्न आयामों पर एक नजर..

मेडिकल साइंस में विकास के कारण बायोइन्फॉरमेटिक्स के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ता जा रहा है. बायोइन्फॉरमेटिक्स इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और बायोटेक्नोलॉजी से मिल कर बना है. इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक का इस्तेमाल मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के क्षेत्र में खासतौर से किया जाता है. यह एक स्पेशलाइज्ड क्षेत्र है. विशेषज्ञों की मानें, तो इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक्स विशेषज्ञों की मांग आपूर्ति से कहीं ज्यादा है.

कैसा है काम

इस क्षेत्र से जुड़े पेशेवर कंप्यूटर टेक्नोलॉजी के माध्यम से बायोलॉजिकल डाटा का सुपरविजन और विश्लेषण करते हैं. साथ ही, इनका काम डाटा स्टोरेज करने के साथ-साथ एकत्र किये गये बायोलॉजिकल डाटा को एक-दूसरे के साथ मिलाना भी होता है. इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक्स का इस्तेमाल शोध के क्षेत्र में बहुत हो रहा है. इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए ह्यूमन हेल्थ, एग्रीकल्चर, इन्वायरनमेंट और ऊर्जा के क्षेत्र में काम करने का भी भरपूर मौका होता है. बायोमॉलिक्यूलर के क्षेत्र में बायोइन्फॉरमेटिक्स का इस्तेमाल दवाओं की क्वालिटी सुधारने के लिए किया जाता है.

क्या है योग्यता

विज्ञान संकाय से 12वीं पास करनेवाले छात्र बायोइन्फॉरमेटिक्स क्षेत्र में प्रवेश ले सकते हैं. यदि इस विषय में अपनी शोध क्षमताओं को और बेहतर करना चाहते हैं, तो ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएट में मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, जेनेटिक्स, माइक्रोबायोलॉजी, केमिस्ट्री, फार्मेसी, वेटेरिनरी साइंस, फिजिक्स और मैथ्स जैसे विषय जरूर होने चाहिए.

रोजगार का क्षेत्र

इन दिनों हर क्षेत्र में तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है. विज्ञान का क्षेत्र इसमें सबसे आगे है. इसलिए बायोइन्फॉरमेटिक्स से जुड़े लोगों की मांग इन दिनों तेजी से बढ़ रही है. खासकर जीवीके बायोसाइंसेस, एस्ट्राजेनेका, डॉ रेड्डी लेबोरेट्रीज, इनजेनोविस, जुबिलेंट बायोसेंस, लैंडस्काइ सॉल्यूशंस जैसी बड़ी कंपनियां हैं, जो अच्छा खासा मौका मुहैया करा रही हैं. इस क्षेत्र में सरकारी और निजी मेडिकल संस्थान, अस्पताल आदि में रिसर्च कार्यो के लिए बायोइन्फॉरमेटिक्स के क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों को नियुक्त किया जाता है, लेकिन बायोइन्फॉरमेटिक्स से जुड़े लोगों के लिए फार्मास्यूटिकल उद्योग रोजगार का सबसे बड़ा क्षेत्र होता है.

इस क्षेत्र से जुड़े पेशेवर कुछ खास क्षेत्र में अपना बेहतरीन कैरियर बना सकते हैं, जैसे सीक्वेंस असेंबलिंग, सीक्वेंस एनालिसिस, प्रोटेओमिक्स, फार्माकोजेनोमिक्स, फार्माकोलॉजी, क्लीनिकल फार्माकोलॉजिस्ट, इन्फॉरमेटिक डेवलपमेंट, कंप्यूटेशनल केमिस्ट्री, बायोएनालिटिक्स, एनालिटिक्स आदि.

विशेषताएं, जो हैं जरूरी

दरअसल, बायोइन्फॉरमेटिक्स का क्षेत्र शोध से जुड़ा हुआ है. इसलिए इस क्षेत्र में कदम रखनेवाले विद्यार्थियों का जिज्ञासू प्रवृत्ति का होने के साथ-साथ उनमें ऑब्जेवशन स्किल होनी भी जरूरी है. इस क्षेत्र में सफल होने के लिए टीम भावना का होना भी जरूरी है.

कितना मिलेगा वेतन

बायोइन्फॉरमेटिक्स में पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री रखनेवाले विद्यार्थियों को शुरुआत में 12 से 20 हजार रुपये प्रति महीने मिल सकते हैं. सरकारी शोध संस्थानों से काम की शुरुआत करनेवाले विद्यार्थियों को शुरुआती दौर में थोड़े कम वेतन से संतोष करना पड़ता है. लेकिन उन्हें अलग से भी कई तरह के भत्ते मिलते हैं. आमतौर पर एमएनसी में इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छा वेतन मिलता है.

सलारपुर में अवैध कब्जों पर चला बुल्डोजर

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा प्राधिकरण पर किसान संगठन द्वारा दिए जा रहे धरना-प्रदर्शन के दौरान वर्ग मीटर भूमि खसरा संख्या-700 से लेकर 711 तक पर किए गए अवैध निर्माण के विरुद्ध बुलडोजर

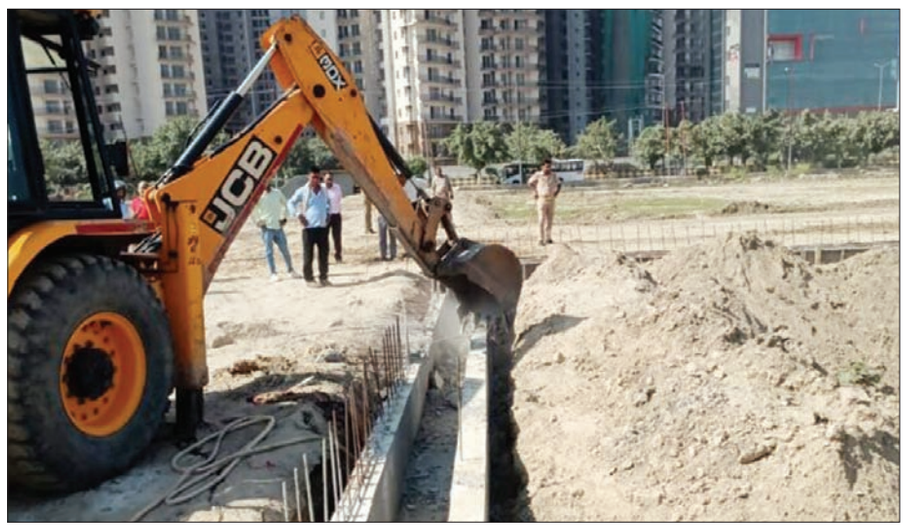

प्राधिकरण के अतिक्रमण हटाओ टीम ने ग्राम-सलारपुर के अधिसूचित क्षेत्र के दस खसरा नंबरों पर बड़ी कार्यवाही करते हुए करोड़ की भूमि को भू-माफिया के चंगुल से बचा लिया।

नोएडा प्राधिकरण की अर्जित एवं कब्जा प्राप्त भूमि पर विभिन्न भू-माफियाओं द्वारा किये जा रहे अतिक्रमणों के खिलाफ प्राधिकरण के भूलेख विभाग, वर्क सर्किल एवं फील्ड स्टाफ की टीम ने संयुक्त रूप से कार्यवाही करते हुए वर्क सर्किल-8 के कार्यक्षेत्र ग्राम-सलारपुर में प्राधिकरण की अधिसूचित 60 हजार चलाकर ध्वस्तीकरण की कार्यवाही की।

यहां पर कुछ लोगों ने अवैध रूप से कब्जा किया हुआ था। ध्वस्तीकरण की कार्यवाही के दौरान भारी पुलिस बल की तैनाती की गई थी। इस दौरान कुछ लोगों ने प्राधिकरण की इस कार्रवाई का विरोध करने का प्रयास किया। जो पुलिस बल देखकर भाग गए। प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि अतिक्रमणकर्ताओं द्वारा उक्त भूमि पर अवैध रूप से चारदीवारी का निर्माण कराया जा रहा था, जिसको ध्वस्त किया गया।

प्राधिकरण अफसरों ने सुनी सेक्टर-27 की समस्याएं

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-27 आरडब्ल्यूए के साथ नोएडा प्राधिकरण द्वारा नोएडा आपके द्वारा कार्यक्रम क्लब 27 में किया गया। जिसमें सेक्टर 27 से संबंधित समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। जिसमें सेक्टर-27 की सड़कों पर अतिक्रमण, ब्लॉक ए, बी एवं ई एफ ई, एफ में सीवर लाइन बदलवाने, पेड़ों की छंटाई, पार्कों के रखरखाव, आवारा पशुओं की समस्या, आवारा कुत्तों द्वारा लोगों को काटने की शिकायत, सेक्टर की नालियों की मरम्मत एवं उनको ढकवाने, डी ब्लॉक मार्केट का सौंदरीकरण एवं शौचालय को ठीक करने आदि विषयों पर वार्ता हुई। जिस पर आश्वासन दिया गया कि जल्द ही इन समस्याओं के समाधान करने का प्रयास कराया जाएगा। इस अवसर पर नोएडा

प्राधिकरण के डीजीएम (सिविल) विजय रावल, वरिष्ठ प्रबंधक (जल) अमरजीत सिंह, मैनेजर (स्वास्थ्य) अरुण कुमार, मैनेजर (वर्क सर्किल-2) नेहा शर्मा, अनिल वर्मा (जल), कामेश्वर राठी(उद्यान) आदि अधिकारियों के साथ सेक्टर-27 आरडब्ल्यूए अध्यक्ष राजीव गर्ग, महासचिव मदन लाल शर्मा ,उपाध्यक्ष विद्याराम अवाना, एम खान आदि उपस्थित रहे।

खाद्य विभाग ने कई प्रतिष्ठानों में मारा छापा

नोएडा (चेतना मंच)। सहायक आयुक्त खाद्य द्वितीय सर्वेश मिश्रा ने बताया कि खाद्य सुरक्षा अधिकारी ओपी सिंह तथा अमर बहादुर सरोज की टीम द्वारा नोएडा के सेक्टर-75 स्थित मैक्स हाइपरमार्केट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से पनीर एवं सरसों के तेल का 1-1 नमूना तथा आम्रपाली लिसयोर बैली ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित बावर्ची बाबा प्रतिष्ठान से पनीर का एक नमूना तथा खाद्य सुरक्षा अधिकारी विजय बहादुर पटेल एवं मुकेश कुमार की टीम द्वारा फेस 2 नोएडा सब्जी मंडी स्थित आसिफ पनीर भंडार एवं जुबेर पनीर भंडार से पनीर का 1-1 नमूना लिया गया।

उन्होंने बताया कि इसी टीम द्वारा चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर-22 में संचालित होने वाली

डेयरी पर व्यवसाय कर रहे मोदीनगर गाजियाबाद निवासी इरफान द्वारा 700 रूपए प्रति किलोग्राम के दर पर 1 किलोग्राम घी पर 1 किलोग्राम घी देने का ऑफर दिया जा रहा था। उन्होंने बताया कि उस पर छापा मारकर लगभग 25 किलोग्राम मिलावटी घी बरामद किया गया। घी का नमूना लेने के बाद अवशेष घी को सीज कर दिया गया।

इसी प्रकार खाद्य सुरक्षा अधिकारी सैयद इबादुल्लाह एवं विशाल गुप्ता की टीम द्वारा ग्रेटर नोएडा स्थित अनमोल इंडस्ट्रीज से केक क्रीम का 1 नमूना का नमूना लिया गया। उन्होंने बताया कि कुल 7 नमूनो को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जा जा रहा है। जांच रिपोर्ट आने के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने बताया कि आगे भी इसी प्रकार से जिलाधिकारी के नेतृत्व में जांच अभियान संचालित करते हुए नमूने संग्रहित करने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी, ताकि जनपदवासियों को निर्धारित मानकों के अनुरूप शुद्ध खाद्य एवं पेय पदार्थ उपलब्ध हो सके।

देवी के कालरात्रि स्वरूप की हुई पूजा-अर्चना

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-110 स्थित रामलीला परिसर में ब्रह्मलीन परम पूज्य महर्षि महेश योगी जी और ज्योतिष पीठाधीश्वर जगत गुरु श्री बासुदेवा नन्द सरस्वती जी महाराज के दिव्य आशीर्वाद से शारदीय नवरात्रि के सातवें दिन यानि नौ अक्टूबर को मां दुर्गा की कालरात्रि स्वरूप की पूजा अर्चना वैदिक पंडितो द्वारा किया गया।

इस पावन अवसर पर रात्रि आठ बजे से रामलीला मंचन के सातवें दिन माता सीता का हरण, राम-सुग्रीव मित्रता और बालि का बध प्रसंग दिखाया गया। रामलीला कार्यक्रम में माता सीता का रावण द्वारा हरण और श्रीराम भगवान का माता सीता की खोज व विलाप प्रसंग ने रामभक्तों को भावुक कर दिया।

मीडिया प्रभारी ए के लाल ने बताया आज की रामलीला मंचन देखने गौतमबुद्धनगर के सांसद डॉ महेश शर्मा आर भाजपा के कार्यकर्त्ता चौधरी तेज सिंह चौधरी नवाब सिंह लोग थे.भंगेल बाजार, सलारपुर और गेझा के अलावा आस-पास के कई सोसाइटियों के भक्त बड़ी संख्या में मौजूद थे।

रामलीला कार्यक्रम को वैश्विक दर्शकों भी सरलता के साथ लाइव दर्शन करने के लिए यू ट्यूब चैनल पर प्रसारण किया जा रहा है।

इस अवसर पर महर्षि महेश योगी संस्थान के अध्यक्ष अजय प्रकाश श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष राहुल भारद्वाज, रामलीला महोत्सव के संयोजक रामेंद्र सचान, महर्षि रामलीला समिति के संजय सिन्हा, शिशिरकांत श्रीवास्तव, यादवेंद्र यादव विनीत श्रीवास्तव कमलेश यादव, प्रभात गोस्वामी, अवधराज शुक्ला, रजनीश यादव, शशिभूषण यादव, श्रीकांत ओझा, विनोद श्रीवास्तव, ललन पाठक, विनोद दीक्षित, एस पी गर्ग सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

रामेश्वर सेतु स्थापना को राम ने शिव का पूजन किया

नोएडा (चेतना मंच)। श्रीराम मित्र मण्डल नोएडा रामलीला समिति द्वारा सेक्टर-62 के रामलीला मैदान में आयोजित रामलीला मंचन के अष्टम दिन मुख्य अतिथि देवदत्त शर्मा पूर्व चेयरमैन नोएडा प्राधिकरण,सतीश पाल अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी नोएडा प्राधिकरण,राजीव कुमार गुप्ता सहायक पुलिस आयुक्त प्रथम,शैव्या गोयल सहायक पुलिस आयुक्त द्वितीय द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर रामलीला का शुभारंभ किया गया। श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग, अध्यक्ष धर्मपाल गोयल एवं महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा मुख्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर और अंगवस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

श्रीराम मित्र मण्डल

लंका दहन के पश्चात रावण दरबार में श्रीराम से युद्ध की नीतियों पर सभी दरबारी अपनी राय प्रस्तुत कर रहे थे। रावण द्वारा विभीषण से उनकी राय पूछी जाती है तो वह रावण से कहते हैं कि अब भी समय है तुम राम की शरण में चले जाओ। रावण इस बात पर अत्यधिक क्रोधित हो जाता है और विभीषण को लात मारकर लंका से बाहर जाने का आदेश देता है। रावण के त्याग के पश्चात विभीषण श्रीराम की शरण में चले जाते हैं।

अगले दृश्य में श्रीराम रामेश्वरम की स्थापना हेतु भगवान शिव की पूजा अर्चना करते हैं और तत्पश्चात नल ओर नील द्वारा सेतु बंधन का कार्य प्रारंभ किया जाता है। नल ओर नील द्वारा श्रीराम का नाम लिखकर फैंके गए पत्थर समुद्र में डूबते नहीं हैं।

अंगद रावण से कहता है कि माता सीता को लौटा दो और प्रभु की शरण में आ जाओ लेकिन अहंकार वश रावण अंगद का उपहास उड़ाता है। तब अंगद अपना पैर रोपते हैं और कोई भी अंगद का पैर डिगा नहीं पाया।अंत में रावण उठता है और ज्योही अंगद का पैर पकड़ने उठता है अंगद कहते हैं कि अगर पैर पकड़ने हैं तो श्रीराम के पकड़ो।रावण लज्जित होता है और अंगद रामदल में पहुंच जाते हैं। श्रीराम सेना लंका पर आक्रमण कर देती है।रावण अपने पुत्र मेघनाद को भेजता है। मेघनाद लक्ष्मण पर शक्ति से प्रहार करता है और लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं।हनुमान जी सुषेन वैद्य को लाते हैं जो संजीवनी लाने को कहते हैं । हनुमान संजीवनी लेने जाते हैं जिसे देख दर्शक प्रसन्नता से झूम उठते हैं ।संजीवनी से लक्ष्मण की मूर्छा खुलती है।

भगवान रामचंद्र जी की महिमा का जितना गुणगान किया जाए उतना ही काम है : डॉ महेश शर्मा

श्री राम लखन धार्मिक लीला कमेटी

नोएडा। श्रीराम लखन धार्मिक लीला कमेटी द्वारा सेक्टर-46 के रामलीला मैदान में आयोजित आठवें दिन की रामलीला का शुभारंभ गणेश पूजन के साथ मुख्य अतिथि डॉ महेश शर्मा क्षेत्रीय सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश कैप्टन विकास गुप्ता द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ महेश शर्मा ने रामलीला देखने आए लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान रामचंद्र ने सभी दुखों को सहते हुए जो साहस और संस्कृति का परिचय दिया वह एक सराहनीय कदम है ,इसलिए भगवान राम की महिमा का जितना गुणगान किया जाए ,शायद वह कम ही है।

भगवान राम महापुरुष थे, और उनका चरित्र अनुकरणीय है, वह एक चरित्र मान महापुरुष थे। इस अवसर पर कैसान विकास गुप्ता राज्य मंत्री ने कहा कि मौजूदा समय में रामलीला का आयोजन कराना और रामलीला देखना भी अपने आप में एक अपनी पुरानी परंपरा को कायम रखने के बराबर है। दोनों मुख्य अतिथियों ने रामलीला आयोजन समिति का रामलीला कराए जाने के लिए आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से हरीश बंसल मुख्य अभियंता नोएडा प्राधिकरण, संजीव कुमार बेदी सहायक महाप्रबंधक नोएडा प्राधिकरण भी मौजूद थे।

इसके अलावा विशिष्ट अतिथि के रूप में सुनील चौधरी प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी, डॉक्टर आश्रय गुप्ता महानगर अध्यक्ष नोएडा समाजवादी पार्टी विपिन मल्हन अध्यक्ष (NEA) मौजूद रहे।

इस अवसर पर रामलीला आयोजन समिति के अध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने आए हुए मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि को स्मृति चिन्ह देकर उनका स्वागत किया।

वहीं स्वागत अध्यक्ष के रूप में अनिल खेड़ा राष्ट्रीय संयोजक हिंदू युवा वहिनी, विक्रम सिंह राठौड़ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिंदू युवा वाहिनी, एवं अध्यक्षता टीसी गोड और राजीव अग्रवाल द्वारा की गई।

इसके अलावा सम्मानित अतिथि विकास यादव, ओपी गुप्ता, इंदु शेखर त्रिपाठी, गगन कोहली, विपिन मल्हन, महेश बाबू गुप्ता, वी के सेठ , राकेश कोहली, सुधीर श्रीवास्तव, राजन खुराना, मयंक गुप्ता, संदीप विरमानी, ओम प्रकाश, शरद चंद जैन, प्रताप मेहता मौजूद रहे।